नया नियम किस विषय में है?

अति महत्वपूर्ण प्रश्न

आर.सी. स्प्रोल

नया नियम किस विषय में है?

अति महत्वपूर्ण प्रश्नों की पुस्तिकाएँ निश्चित् मसीही सच्चाइयों के विषय में एक सहज परिचय प्रदान करती हैं। इस बढ़ते हुए संग्रह में निम्न शीर्षक सम्मिलित हैं:

यीशु कौन है?

क्या मैं बाइबल पर भरोसा कर सकता हूँ?

क्या प्रार्थना बातों को बदलती है?

क्या मैं परमेश्वर की इच्छा को जान सकता हूँ?

मुझे इस संसार में कैसे जीना चाहिए?

नया जन्म होने का अर्थ क्या है?

क्या मुझे निश्चय हो सकता है कि मैं उद्धार पाया हुआ हूँ?

विश्वास क्या है?

मैं अपने दोषबोध के साथ क्या कर सकता हूँ?

त्रिएकता क्या है?

श्रृंखला की शेष पुस्तकों के लिए कृपया जाएँ:

https://margsatyajeevan.com

अप्र

नया नियम किस विषय में है?

आर.सी. स्प्रोल

मार्ग सत्य जीवन
क्रीस्तीय विचारों का संसार

Originally published in English under the title:
What Is the New Testament About?
© 2025 by the R.C. Sproul Trust

Published by Ligonier Ministries
421 Ligonier Court, Sanford, FL 32771, U.S.A.
Ligonier.org

Translated by permission. All rights reserved.

First Hindi Translation and Print 2026
This Hindi edition is issued in arrangement with Ligonier Ministries, USA.
Translated and published in India by 'Marg Satya Jeevan'
for distribution and sales worldwide.
'Marg Satya Jeevan' is a brand of Hodalzo Services Pvt. Ltd. company which exists to print, publish & distribute resources for the Church in India.

Hindi ISBN: 978-81-991107-1-7 (Paperback)
Hindi ISBN: 978-81-991107-2-4 (eBook)

प्रथम हिन्दी अनुवाद एवं संस्करण 2026
'नया नियम किस विषय में है?' पुस्तक का हिन्दी संस्करण लिग्नियर मिनिस्ट्रीज़ के प्रायोजन से 'मार्ग सत्य जीवन' द्वारा अनुवादित एवं प्रकाशित किया गया है।

अधिक संसाधनों के लिए *मार्ग सत्य जीवन* की वेबसाइट पर जाएँ:

https://margsatyajeevan.com

विषय सूची

एक परमेश्वर का राज्य 1

दो उद्धार 13

तीन कलीसिया 25

चार मिशन 35

पाँच द्वितीय आगमन 41

लेखक के विषय में 55

अध्याय एक

परमेश्वर का राज्य

The Kingdom of God

यदि नए नियम के विद्वानों के बीच किसी विषय पर सर्वसम्मति है, तो वह पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के राज्य की केन्द्रीयता के विषय में है। परन्तु सहमति यहीं तक सीमित है। मतभेद इस बात पर प्रारम्भ होता है कि परमेश्वर के राज्य का अर्थ क्या है और वह कब प्रकट होता है।

तथापि, परमेश्वर के राज्य की यह अवधारणा व्यापक ख्रीष्टीय जगत में बहुत कम चर्चा का विषय है। यह प्रतीत होता है कि यह विषय ख्रीष्टीय लोगों का ध्यान उतना आकर्षित नहीं करता जितना बाइबल के लेखकों को करता था। इस कारण यह उचित होगा कि हम इस विषय की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करें, जो नए नियम का एक अत्यन्त केन्द्रीय विषय है।

स्वर्ग के राज्य का मूल विषय नए नियम की सबसे प्रारम्भिक उद्घोषणाओं में स्पष्ट रूप से उपस्थित है। "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है"—यह वह सन्देश था जिसे प्रारम्भ में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा और फिर प्रभु यीशु द्वारा उनकी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में प्रचारित किया गया (मत्ती 3:2; 4:17)। लूका का सुसमाचार इस विषय के मूल महत्व की पुष्टि करता है:

> [38] फिर वह उठा और आराधनालय से निकलकर शमौन के घर गया। वहाँ शमौन की सास तीव्र ज्वर से पीड़ित थी और उन्होंने उसके लिए उससे विनती की। [39] उसके निकट खड़े होकर उसने ज्वर को डाँटा और ज्वर उतर गया और वह तत्काल उठकर उनकी सेवा-टहल में लग गई।
>
> [40] जब सूर्यास्त होने लगा तो वे सब जिनके यहाँ विभिन्न प्रकार के रोगों से पीड़ित रोगी थे, उन्हें उसके पास लाए और उसने प्रत्येक पर हाथ रखकर उन्हें चँगा किया। [41] दुष्टात्माएँ भी बहुत लोगों में से चिल्लाती और यह कहती हुई निकल गईं, "तू परमेश्वर का पुत्र है!" और वह उन्हें डाँटता और बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानती थीं कि वह ख्रीष्ट* है।
>
> [42] जब दिन निकला तो वह निकलकर एकान्त स्थान में चला गया।

---

* यद्यपि परम्परागत रीति से यूनानी शब्द ख्रिस्टोस को हिन्दी अनुवादों में 'मसीह' के रूप में अनुवाद किया गया है, इसके लिए 'ख्रीष्ट' शब्द अधिक उपयुक्त है। इसका कारण यह है कि 'मसीह' शब्द इब्रानी भाषा के *मशियाख* अर्थात् मसीहा शब्द से लिया गया है, जबकि नए नियम की मूल भाषा यूनानी है। अन्य भाषाओं के बाइबल अनुवादों में भी *ख्रिस्टोस* के लिए उसी पर आधारित शब्दों का ही उपयोग किया गया है। इसलिए, इस पुस्तक में 'मसीह' के स्थान पर 'ख्रीष्ट' शब्द का उपयोग किया गया है।

> और जनसमूह उसे ढूँढते हुए उसके पास पहुँचा और चाहता था कि यीशु उनके पास से न जाए। 43 पर उसने उनसे कहा, "मुझे अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसी उद्देश्य से भेजा गया हूँ।" (लूका 4:38–43)

यीशु की आत्मचेतना में और उसकी स्वयं की गवाही के अनुसार, उसके पृथ्वी पर आने के प्रमुख कारणों में से पहली बात यह थी कि वह परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने के लिए आए थे। और यह परमेश्वर का राज्य क्या है? क्या यह कोई चकित करने वाला नया विचार है, जो अचानक और स्वाभाविक रूप से नए नियम की भूमि से उग आता है? नहीं—परमेश्वर को राजा के रूप में देखना, ऐसा राजा जो किसी प्रजा और किसी स्थान पर राज्य करता है, जो कि एक राज्य के मूल तत्व हैं—यह धारणा पुराने नियम में गहराई से जड़ें जमाए हुए है और अन्तर्निहित है।

हम यह सोचने के लिए प्रेरित हो सकते हैं कि इस्राएल में परमेश्वर के राज्य के विषय का प्रारम्भ, राजशाही की स्थापना से हुआ होगा। शाऊल के इस्राएल का राजा अभिषिक्त किए जाने से पूर्व राष्ट्र एक ढीले-ढाले गोत्रीय संघ के रूप में था जिसका नेतृत्व चमत्कारी अगुवों द्वारा होता था जिन्हें न्यायी कहा जाता था। फिर लोगों ने परमेश्वर से यह विनती की कि उन्हें भी एक राजा दिया जाए क्योंकि वे अन्य राष्ट्रों के समान बनना चाहते थे।

परन्तु इस्राएल का कोई राजा नहीं था, क्योंकि यहोवा ही इस्राएल का

राजा था। लोगों की यह इच्छा कि उनके पास भी एक राजा हो जैसे अन्य जातियों के पास होता है, एक प्रकार से परमेश्वर के राजाधिकार का इनकार था और इस कारण से परमेश्वर का क्रोध भी उन पर प्रकट हुआ। परन्तु परमेश्वर ने उनकी इच्छा को स्वीकार किया, पर यह निर्धारित किया कि राजा का अभिषेक याजक द्वारा किया जाएगा। यह इस बात का संकेत था कि राजा परमेश्वर के मन के अनुसार है। वह परमेश्वर का अभिषिक्त—उसका *मशियाख (mashiach)* या मसीहा—था।

अब, इस्राएल का राजा अन्य सभी राष्ट्रों के राजाओं से भिन्न था। वह स्वयं में पूर्ण सम्प्रभुता नहीं रखता था। वह व्यवस्थाविवरण में दिए गए राजा के लिए निर्धारित विधि के अधीन था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस्राएल का राजा स्वयं यहोवा का उप-राजशासक या अधीन शासक होता था। यह बात पुराने समय से—वास्तव में सृष्टि से—स्पष्ट है कि प्रभु परमेश्वर सारी सृष्टि का राजा है। सम्पूर्ण संसार सम्प्रभु राजा का क्षेत्र है।

इस्राएल की प्रजा पृथ्वी पर एक राज्य की प्रतीक्षा कर रही थी। वे परमेश्वर की प्रभुता से जुड़ी हुई किसी बात की भी प्रतीक्षा कर रहे थे, विशेष रूप से उस विजयी जय की जो परमेश्वर राष्ट्रों पर प्राप्त करेगा। यह विजय उसके नियुक्त मसीहा के द्वारा—मसीहा राजा के द्वारा—आने वाली थी, जो धार्मिकता की बुराई पर, इस्राएल की अन्य राष्ट्रों पर और परमेश्वर की दुष्ट शक्तियों पर विजय लाने वाला था। क्योंकि यद्यपि परमेश्वर राजा है, उसके राज्य में हर कोई उसकी अधीनता स्वीकार नहीं करता। लोग अन्य देवताओं

की उपासना कर रहे थे; उनके हृदयों में अन्य देवताओं ने यहोवा के अधिकार को छीन लिया था।

पुराने नियम का छुटकारे का इतिहास अनिवार्य रूप से उस क्षण की ओर अग्रसर हो रहा था जब परमेश्वर का राज्य स्थान और समय में पृथ्वी पर प्रकट होने वाला था। नया नियम इस घटना को परमेश्वर के राज्य के सामर्थ्य के साथ आने के रूप में वर्णित करता है। भविष्यद्वक्ताओं ने इस आने वाले राज्य की भविष्यवाणी की थी, परन्तु उन्होंने हमेशा इसे भविष्य में घटने वाली घटना के रूप में प्रस्तुत किया। फिर हम पुराने नियम के अन्त तक पहुँचते हैं, जहाँ लोग प्रभु के दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे—यह वह दिन था जब राजा का राज्य पूर्ण रीति से प्रकट होगा।

इसके पश्चात् इस्राएल ने चार सौ वर्षों की मौन का अनुभव किया; यहोवा की ओर से कोई वाणी नहीं आई। कभी-कभी जब हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि वहाँ लगभग हर दिन आश्चर्यकर्म हो रहे थे और हर झाड़ी के पीछे एक स्वर्गदूत खड़ा था और हर नगर में कोई नबी था। हमें ऐसा प्रतीत होता है कि यदि किसी को यहोवा से कोई वाणी चाहिए होती थी, तो वह सीधे मार्ग में चलकर नबी से मिलकर नवीन भविष्यवाणी सुन सकता था। यह छवि हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि "आज के समय में परमेश्वर कहाँ हैं?" हमें अब वैसी भविष्यवाणी सुनने को नहीं मिलती है। परन्तु इस्राएल ने मलाकी की मृत्यु से लेकर नए नियम के समय तक चार सौ वर्षों की गहन

चुप्पी और भविष्यवाणी के विराम का अनुभव किया था। यह समय अवधि बहुत लम्बी थी।

चार सौ वर्षों के मौन के बाद अचानक जंगल से एक मनुष्य प्रकट हुआ जो एक जंगली पुरुष की भाँति कपड़े पहने हुए और इस्राएल के भविष्यवक्ताओं के पारम्परिक वस्त्रों में था और उसने नबी की तरह घोषणा करते हुए कहा: "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" नए नियम की यही नई विषय-वस्तु है। राज्य के आगमन का विचार नया नहीं था, परन्तु यह विचार कि वह निकट आ गया है—एक क्राँतिकारी विचार था।

यूहन्ना ने इस्राएल के घराने को पश्चाताप और बपतिस्मा लेने के लिए बुलाया क्योंकि उद्धार का इतिहास अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच रहा था। यही वह क्षण था जिसकी यहूदी लोग प्रतीक्षा कर रहे थे; राजा द्वार पर था। परन्तु लोग उसके स्वागत के लिए पर्याप्त रीति से पवित्र और शुद्ध नहीं थे। यह यहूदियों के लिए अत्यन्त अपमानजनक सुझाव था कि कोई यह कहे कि वे अशुद्ध थे और उन्हें बपतिस्मा की आवश्यकता थी।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तपस्वी जीवन जीता था। वह जंगल में रहता था, टिड्डियाँ और जंगली मधु खाता था और पशुओं के चमड़े को पहिनता था। इसके विपरीत, यीशु धनवानों, सामर्थी और प्रतिष्ठित लोगों के साथ उठता-बैठता और खाता-पीता था। इसी कारण यीशु की आलोचना की गई और उसने उत्तर में कहा, "जब तक दूल्हा उनके साथ है, क्या तुम उसके बरातियों से उपवास करवा सकते हो?" (लूका 5:34)। यह एक नया चरण था—दूल्हा आ चुका था।

यीशु ने अपने आगमन से प्रभावित परिवर्तन को स्पष्ट करते हुए कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि स्त्रियों से जन्म लेने वालों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई भी नहीं हुआ, फिर भी जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है। ... क्योंकि सब नबी और व्यवस्था यूहन्ना के आने तक भविष्यद्वाणी करते रहे।" (मत्ती 11:11, 13)। यीशु यह नहीं कह रहा था कि हम जो राज्य में प्रवेश पा चुके हैं, छुटकारे के इतिहास में यूहन्ना से अधिक महत्वपूर्ण हैं। यूहन्ना राजा का अग्रदूत था। यीशु यह कह रहा था कि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक शासन करते रहे हैं।

मैं प्रायः छात्रों से यह प्रश्न पूछता था कि "पुराने नियम का सबसे महान् नबी कौन था?" मुझे कई उत्तर मिलते थे, जैसे—"यिर्मयाह," "यशायाह," "यहेजकेल," "दानिय्येल," "आमोस," और "योएल।" परन्तु नहीं—पुराने नियम का सबसे महान् नबी यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला था। आपत्ति जताते हुए वे कहते कि वह तो नए नियम में है, पुराने में नहीं। फिर मैं क्यों कहता हूँ कि यूहन्ना पुराने नियम का सबसे बड़ा नबी था?

नया नियम कब प्रारम्भ होता है? यदि आप इसे पुस्तकों के संग्रह के रूप में समझते हैं, तो निश्चय ही यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला वहाँ मिलता है। परन्तु यदि आप नए नियम को छुटकारे के इतिहास की समय-आवधि के रूप में देखते हैं, तो व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक और उसके समयकाल तक शासन करते रहे हैं। इसलिए वे पुराने नियम की अवधि के अन्तर्गत आते हैं। नया काल वास्तव में यीशु की सेवकाई के आरम्भ से प्रारम्भ होता है। जब

यीशु आता है, तो यूहन्ना से भी एक परिवर्तन होता है। यूहन्ना कहता था कि परमेश्वर का राज्य "निकट है।" पर जब यीशु आता है, तो परमेश्वर का राज्य "आ गया है।"

किस अर्थ में वह राज्य आ गया है? सर्वप्रथम—राजा यहाँ है। परमेश्वर का अभिषिक्त मसीहा मंच पर आ चुका है। दूसरा—यीशु परमेश्वर के राज्य के विषय में कुछ चौंकानेवाले कथन कहता है। उदाहरण के लिए, उसने कहा, "परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।" (लूका 11:20) (अंग्रेज़ी बाइबल में "परमेश्वर की सहायता" के स्थान पर "परमेश्वर की ऊँगली" का प्रयोग है।) "परमेश्वर की ऊँगली" इस संसार में कार्यरत परमेश्वर की सामर्थ्य और पवित्र आत्मा के कार्य का प्रतीक है। यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकाल रहा था। यीशु ने अनेक प्रकार के आश्चर्यकर्म किए, जिनमें रोगियों को चंगा करना और मरे हुओं को जिलाना सम्मिलित है। अन्य लोगों ने भी कुछ इसी प्रकार के आश्चर्यकर्म किए। फिर इस विशेष आश्चर्यकर्म में क्या विशेषता थी? पुराने नियम में किसी ने भी शैतान को नहीं निकाला। यह एक असाधारण सामर्थ्य था जिसे यीशु ने प्रकट किया और जो पुराने नियम के मूसा, एलिय्याह अथवा एलीशा के पास भी नहीं था।

पुराने नियम के यहूदी के लिए परमेश्वर के राज्य की अपेक्षा, यहोवा की विजय की धारणा में थी। अब परमेश्वर की बुराई की शक्तियों पर विजय, यीशु की दुष्टात्माओं को निकालने की क्रियाओं में देखी गई। यीशु ने कहा कि

यदि तुम परमेश्वर की उस विशेष विजय को देखते हो, तो जानो कि कुछ घटित हो चुका है—परमेश्वर का राज्य तुम पर आ चुका है।

फिर भी हम देख सकते हैं कि यद्यपि ख्रीष्ट ने क्रूस पर अपने प्रतिनिधिक प्रायश्चित, पुनरुत्थान में पाप और मृत्यु पर विजय और विशेष रूप से अपनी महिमामय स्वर्गारोहण और राजा स्वरूप राज्याभिषेक किया, फिर भी कुछ शेष है। यही कारण है कि विद्वान प्रायः परमेश्वर के राज्य को "*आ चुका*" और "*अब तक नहीं*" की दृष्टिकोण में समझाते हैं। एक अर्थ में राज्य आ चुका है—परन्तु अभी तक उसकी पूर्णता नहीं हुई है। अभी एक और अध्याय लिखा जाना बाकी है और हम ख्रीष्टीय होकर आज इतिहास के एक अत्यंत महत्वपूर्ण समय में जी रहे हैं।

यदि हम छुटकारे के इतिहास को इस प्रकार देखें, तो हम पाते हैं कि पुराने नियम में अपेक्षा थी और फिर नए नियम के प्रारम्भ के साथ राज्य का "*आ चुका*" पहलू शक्ति और अधिकार में आया। राजा परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने ओर बैठ चुका है। यीशु अभी राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में राज्य करता है। परमेश्वर ने अपने मसीहा को भेजा है। उसका मसीहा स्वर्ग पर विराजमान है। परन्तु अब भी राज्य का "*अब तक नहीं*" वाला पहलू शेष है, जिसकी हम प्रतीक्षा करते हैं—और हम राज्य के आगमन और उसकी परिपूर्णता के बीच के मध्यकाल में जी रहे हैं।

ख्रीष्टीय लोगों के लिए यह समझना अत्यन्त आवश्यक है। बहुत से ख्रीष्टीय लोग ऐसे जीवन जीते हैं जैसे कि हम पुराने नियम के दिनों में ही हैं—मानो अब्राहम के समय से कुछ भी नहीं बदला हो। नया नियम बताता है कि परमेश्वर के लोग संसार को उलट-पुलट कर देते थे; वे साहसी और निर्भीक होते थे। वे ऐसा इसलिए कर सकते थे क्योंकि एक महत्वपूर्ण विजय पहले ही प्राप्त हो चुकी थी और क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर अभी भी राज्य कर रहा है। इस वास्तविकता की समझ निर्भीक जीवन जीने की शक्ति और आत्मविश्वास देती है।

नए नियम की परिपूर्णता क्रूस नहीं है—यद्यपि वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है; और न ही यह पुनरुत्थान है—यद्यपि वह भी महत्वपूर्ण है। यह स्वर्गारोहण है—जब राजा परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठाया गया है, विराजमान हुआ है और स्वर्ग और पृथ्वी का सम्पूर्ण अधिकार उसे दिया गया है। यदि यह सत्य है कि अभी यीशु ख्रीष्ट राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है, तो यह हमारे संसार के प्रति उत्तरदायित्व का क्या अर्थ रखता है? क्या हमें पहाड़ों में छुपे रहना चाहिए, इस आशा के साथ कि यीशु आएगा और बचाने के लिए हम उससे निवेदन करेंगे? यीशु ने कहा, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।" (प्रेरितों 1:8)

क्योंकि ख्रीष्ट अब राजा है—वह हर ख्रीष्टीय व्यक्ति को नियुक्त करता है। वह हर ख्रीष्टीय को वरदान देता है। वह हर ख्रीष्टीय को अपना पवित्र आत्मा

देता है और वह हर ख्रीष्टीय को समान उत्तरदायित्व देता है। यह उत्तरदायित्व विशेष कार्यों और विशेष वरदानों के अनुसार भिन्न होगा। हर व्यक्ति को अलग-अलग वरदान मिले हैं। हम सभी को शिक्षा देने के लिए नहीं बुलाया गया है। हम सभी को प्रचार करने के लिए नहीं बुलाया गया है। हम सभी को दरिद्रों और उत्पीड़ितों के साथ कार्य करने के लिए नहीं बुलाया गया है। हम सभी को आपराधिक न्याय में कार्य करने के लिए नहीं बुलाया गया है। ऐसे लाखों मार्ग हैं जिनसे हम राजा की सेवा कर सकते हैं।

ख्रीष्टीय होने के नाते हमें एक बात अवश्य करनी चाहिए—यह माँग करना बन्द करें कि राज्य में हर कोई वही करे जो हम कर रहे हैं। एक धारणा है कि यदि आप नगर के दरिद्रों के बीच काम कर रहे हैं, तो हर किसी को—यदि वे परमेश्वर के राज्य में विश्वासयोग्य हैं—ऐसा ही करना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि यदि आपका ईश्वर-विज्ञान शुद्ध नहीं है, यदि आप सत्य के प्रति उसकी सभी विशेषताओं में पूर्ण निष्ठा नहीं रखते हैं, तो आप वास्तव में परमेश्वर के राज्य को नहीं समझते हैं। यह अपरिपक्वता है और ख्रीष्ट की देह के लिए हानिकारक है—क्योंकि नया नियम बार-बार बताता है कि भिन्न वरदान और भिन्न बुलाहटें होती हैं और हम सभी को वहीं सेवा करनी है जहाँ परमेश्वर ने हमें रखा है और उन तरीकों से करनी है जिनमें परमेश्वर ने हमें सक्षम किया है। परन्तु एक बात जो हम सभी में समान है वह यह कि हर ख्रीष्टीय व्यक्ति को यीशु ख्रीष्ट के राज्य की साक्षी देनी है।

आइए दिखाएँ कि हमारे राजा की इच्छा क्या है और हमारा राजा कैसा

है। जहाँ कहीं भी हम जाएँ, हमें साक्षी देनी है। यह प्रचार के माध्यम से हो सकता है। यह शिक्षा के माध्यम से हो सकता है। यह दया की सेवाओं के माध्यम से हो सकता है। यह परिवार के पालन-पोषण के माध्यम से हो सकता है। परन्तु हर ख्रीष्टीय का यह उत्तरदायित्व है कि वह ख्रीष्ट के राज्य की इस धारणा को—जो परमेश्वर के राज्य में है—प्रदर्शित करे।

यही "*आ चुका*" और "*अब तक नहीं*" के तनाव के कारण पवित्र आत्मा अपने लोगों को सुसमाचार और राजा के संदेश के साथ संसार में भेजता है। यही वह बात है जिसे संसार नहीं जानता। यीशु ने इसे इस प्रकार कहा: "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।" (मत्ती 5:16)

यीशु चाहता है कि हम राजा की सन्तान बनें—कि लोग हम में परमेश्वर के राज्य की उपस्थिति को देखें, न केवल हमारे हृदयों में बल्कि हमारे जीवनों में भी और उस संसार में जिसे हम रचते हैं—हमारे सम्बन्धों में, हमारे व्यवसायों में और हर उस क्षेत्र में जो यह दर्शाता है कि हम परमेश्वर के सम्प्रभु अधिकार को पहचानते हैं और उसके अभिषिक्त के सामने नतमस्तक होते हैं। हम इस ज्ञान में जीते हैं कि उसे परमेश्वर पिता ने नियुक्त किया है और स्वर्ग और पृथ्वी में समस्त अधिकार उसे दिया गया है। ख्रीष्टीय होने के कारण, यही हमारा उद्देश्य है।

अध्याय दो

उद्धार

Salvation

उद्धार क्या है? उद्धार का विषय नए नियम में बहुत प्रारम्भ में ही प्रस्तुत किया गया है और निश्चित रूप से यह कोई नई अवधारणा नहीं है जो केवल नए नियम के युग तक सीमित है। यह एक ऐसा विषय है जिस पर पुराने नियम में विस्तार से चर्चा की गई है। जब हम उद्धार की धारणा को देखते हैं, तो हम एक ऐसे झुकाव के अहसास हो जाते हैं जो बाइबलीय अर्थानुवाद के अन्य पहलुओं को भी प्रभावित करता है—यह झुकाव कि किसी ऐसे सिद्धांत को, जो कलीसिया के दो हजार वर्षों के इतिहास, विश्वास-वचनों और विधिवत ईश्वरविज्ञान द्वारा विकसित और परिभाषित हो चुका है, हम हर बार नए नियम के पाठ में किसी विशेष शब्द को देखकर उसी सिद्धांत को लागू करने लगते हैं।

उदाहरण के लिए, हम नए नियम में पढ़ते हैं कि प्रेरित पौलुस एक ओर हमें बताते हैं कि स्त्रियाँ सन्तान जनने के द्वारा उद्धार पाएँगी। अब, यदि हम उस पद में और "*उद्धार*" शब्द में वह पूरी विकसित उद्धार की शिक्षा डाल दें जो दो हजार वर्षों के कलीसियाई इतिहास से आया है, तो हमें प्रेरित पौलुस के अर्थ को समझने में बड़ी कठिनाई होगी। पौलुस यह भी कहता है कि अविश्वासी पति, विश्वास करनेवाली पत्नी के द्वारा पवित्र ठहराया जाता है; और अविश्वासी पत्नी, विश्वास करनेवाले पति के द्वारा पवित्र ठहराई जाती है। हम सामान्यतः पवित्रीकरण को धर्मी ठहराए जाने के बाद की प्रक्रिया मानते हैं और यह भी कि केवल धर्मी ठहराए गए लोग ही पवित्रीकरण का अनुभव करते हैं। तो यदि अविश्वासी पत्नी, विश्वास करनेवाले पति के द्वारा पवित्र ठहराई जाती है, तो अविश्वासी पत्नी के बारे में क्या बोध होगा? यह कि वह अपने पति के विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराई जाती है। तो अब हमारे पास धर्मी ठहराए जाने के दो मार्ग हो गए। एक ओर नया नियम यह सिखाता है कि धर्मी ठहराया जाना केवल विश्वास के द्वारा है, अर्थात व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा; और अब हमें यहाँ यह मिलता है कि धर्मी ठहराया जाना उस व्यक्ति से विवाह करने के द्वारा भी हो सकता है जिसके पास विश्वास है। और यदि यह भी काम न करे, तो एक स्त्री होकर, आप एक बच्चा जनकर उद्धार पा सकती हैं, या *धर्मी ठहराई* जा सकती हैं।

क्या आपको दिख रहा है कि यदि हम नए नियम में एक पूर्ण विकसित सिद्धांत को लेकर जाएँ और हर बार किसी विशेष शब्द के आने पर उसे लागू करें, तो हमारे सामने कैसी समस्या आ जाती है? "*उद्धार*" जैसे शब्द की समस्या यह है कि बाइबल में इस शब्द के कई अलग-अलग अर्थ हैं।

आइए, हम लूका के सुसमाचार के पहले अध्याय के एक अनुच्छेद को देखें। यहाँ जकर्याह के पास स्वर्गदूत के आगमन का वर्णन है, जब वह मन्दिर में सेवा कर रहा था; उसे यह बताया गया कि उसकी पत्नी एलीशिबा, जो बालक जनने की आयु से आगे निकल चुकी है, एक पुत्र को जन्म देगी। निश्चय ही, यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म की घोषणा है।

जकर्याह तब एक भविष्यवाणीपूर्ण प्रवचन देता है:

"इस्राएल का प्रभु परमेश्वर धन्य हो,
क्योंकि उसने हमारी सुधि ली है
और अपने लोगों के छुटकारे का कार्य पूरा किया है।
और हमारे लिए अपने सेवक दाऊद के घराने में
उद्धार का एक सींग निकाला है,
जैसा कि उसने प्राचीनकाल से अपने पवित्र
नबियों के मुंह से कहलवाया था,
कि हमारे शत्रुओं से और हम से बैर रखने वालों
के हाथों से हमारा उद्धार हो,
कि हमारे पूर्वजों पर दया करे और अपनी

पवित्र वाचा का स्मरण करे,
अर्थात् वह शपथ जो उसने हमारे पिता
इब्राहीम से खाई थी,
कि हमें यह वर दे कि हम अपने शत्रुओं के
हाथों से छुड़ाए जाकर निर्भयता से
अपने जीवन भर पवित्रता और धार्मिकता
सहित उसकी सेवा करें।
और तू, हे बालक, परमप्रधान का नबी कहलाएगा,
क्योंकि तू प्रभु के आगे-आगे चलेगा कि उसका
मार्ग तैयार करे।
और उसके लोगों को उनके पापों की क्षमा*
के द्वारा उद्धार का ज्ञान दे।
हमारे परमेश्वर की अपार करुणा के कारण
हम पर ऊपर से सूर्योदय का प्रकाश चमकेगा,
अर्थात् उन पर जो अन्धकार और मृत्यु की
छाया में बैठे हैं,
कि हमारे पैरों की अगुवाई शान्ति के
मार्ग पर करे।" (लूका 1:68-79)

हम यहाँ छुटकारे, उद्धार और छुड़ौती के विषय को देख सकते हैं। तीन बार, जकर्याह किसी ऐसी घटना के आगमन के बारे में बोलता है, जिसका

अर्थ है कि परमेश्वर अपने लोगों को उद्धार देने के लिए उनसे मिलने आ रहा है। तो उद्धार क्या है?

सरल अर्थ में, यह शब्द किसी स्पष्ट और घातक खतरे से छुड़ाए जाने या किसी आपदा के संकट से बचाए जाने को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, पुराने नियम में, यदि इस्राएल की सेनाएँ उग्र युद्ध में हैं और युद्ध की दिशा उनके विरुद्ध जाती हुई प्रतीत होती है, परन्तु अचानक वर्षा होने से शत्रुओं के रथ कीचड़ में फँस जाते हैं और युद्ध की दिशा बदल जाती है तथा इस्राएल विजयी होता है, तब वे परमेश्वर के द्वारा दिए गए उद्धार का गीत गाएँगे। यह उस ईश्वर-विज्ञानीय अर्थ में नहीं है जिसमें हम उद्धार को धर्मी ठहराए जाने के रूप में समझते हैं; बल्कि यह कि वे सैन्य पराजय से बच गए हैं।

हम पुराने नियम में यह भी पाते हैं कि जब किसी प्राकृतिक आपदा, जैसे ओलावृष्टि, बाढ़ या भूकंप से, जो लगभग लोगों का विनाश कर देती है और अंतिम क्षण में इस्राएल के लोगों की छुड़ौती होती है, तब वे परमेश्वर के द्वारा दिए गए उद्धार के लिए आभारी होते हैं। फिर से, यह उद्धार का वह सिद्धांत नहीं है जिसके विषय में हम रविवार स्कूल की कक्षाओं या अपने ईश्वर-विज्ञान पाठ्यक्रमों में बात करते हैं। सरल अर्थ में, किसी विपत्ति से छुटकारा पाना है।

नए नियम में, हम देखते हैं कि यीशु प्रायः लोगों को चंगा करने की सेवा में लगा रहता है। कोई भयानक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति यीशु के पास आता है और यीशु उसका अभिषेक करके कहते हैं, "तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है, कुशल से चली जा।" (लूका 7:50)। हम प्रायः ऐसे पदों में यह अर्थ पढ़ लेते हैं कि उस व्यक्ति को अब धर्मी ठहराने वाला विश्वास प्राप्त हो गया है और उसने ख्रीष्ट को उद्धारकर्ता के रूप में पहचान लिया है और वह सदा के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर गया है। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि यह उद्धार का सिद्धांत हो। प्रथम शताब्दी का यहूदी इस वचन से मुख्य रूप से यही अर्थ निकालता है कि उस व्यक्ति के विश्वास ने यीशु की चंगाई की सेवा का लाभ पाने में साधन का कार्य किया है, जिससे वह उस बीमारी की विपत्ति से छुटकारा पा सका है।

बाइबलीय दृष्टिकोण से, वह अन्तिम उद्धार क्या है? इसे समझने के लिए पहले हमें इस शुभ समाचार की पृष्ठभूमि को देखना होगा, जिसमें परमेश्वर के छुटकारा देने के आगमन की घोषणा होती है। परमेश्वर के उद्धार लाने के लिए कुछ ऐसा होना चाहिए जिससे व्यक्ति बचाया जाए। कोई संकट, कोई स्पष्ट और वर्तमान खतरा होना चाहिए, जिससे छुड़ाए जाने का अर्थ ही उद्धार हो। फिर, नए नियम की श्रेणियों में, मनुष्य पर मंडराने वाला सबसे भयानक और अंतिम संकट क्या है? यह पाप नहीं है। यह पाप का दण्ड है। यह जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना है, जिसे भस्म करने वाली आग के रूप में चित्रित किया गया है, जो सब लोगों को न्याय के लिए बुलाता है।

बीसवीं शताब्दी के अन्त में परमेश्वर के क्रोध को शान्त करने या तुष्ट करने के विचार को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ। कुछ लोगों ने इस विचार पर आपत्ति की कि यीशु का कार्य किसी भी प्रकार परमेश्वर के क्रोध को सन्तुष्ट करने या शान्त करने के लिए था। इन लोगों का मत था कि परमेश्वर उससे बड़ा है। उसे प्रायश्चित की आवश्यकता नहीं है। उसे दण्डात्मक होने की आवश्यकता नहीं कि वह अपने पुत्र पर अपना क्रोध उण्डेले, ताकि उन भटके हुए और पतित बच्चों को छुड़ा सके जिन्हें वह अत्यन्त प्रेम करता है। उसके लिए केवल यह पर्याप्त है कि वह सबको अनन्तकालीन क्षमा का आदेश दे दे और सब कुछ ठीक हो जाएगा। यह परमेश्वर के क्रोध को ख्रीष्ट के प्रायश्चित द्वारा शान्त करने की प्राचीन शास्त्रीय धारणा का त्याग था।

यहाँ प्रश्न उठता है कि उद्धार वास्तव में है क्या। यदि परमेश्वर का पवित्र क्रोध जैसी कोई बात नहीं है, तो कोई अन्तिम भय की चिन्ता भी नहीं रह जाती है। तब ख्रीष्ट का क्रूस केवल परमेश्वर के प्रेम और उसकी भलाई का एक उदाहरण मात्र रह जाता है। परन्तु यदि आप नए नियम को पढ़ते हैं और ख्रीष्ट की सेवकाई को समझने का प्रयास करते हैं और इस विचार की उपेक्षा करते हुए कि परमेश्वर का क्रोध वास्तविक है, तो आप पाठ के साथ अत्यन्त अन्याय करेंगे। यदि आप नए नियम को गम्भीरता से लेना चाहते हैं, तो आप यह अनदेखा नहीं कर सकते कि नया नियम इस विचार से परिपूर्ण है कि यीशु हमें बचाने आया, जैसा कि पौलुस कहता है: "हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।" (1 थिस्स. 1:10)।

हमने देखा है कि जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ की, तो उन्होंने लोगों को मन फिराने का आह्वान दिया क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट था और लोग तैयार नहीं थे। वे परमेश्वर के क्रोध के सामने नग्न और घातक संकट में थे। वह क्रोध मनमाना नहीं है, यह अनियन्त्रित नहीं है, यह अविवेकी नहीं है। यह परमेश्वर की, संसार की दुष्टता और बुराई के प्रति, प्रतिक्रिया है जिसे उसने अच्छा बनाया और जिसे वह अपनी पवित्रता को प्रतिबिंबित करने के लिए बुलाता है।

जकर्याह का गीत हमें बताता है कि परमेश्वर स्वयं एक को भेज रहा है जो हमें उसके ही क्रोध से बचाएगा। उसने अपने क्रोध को शान्त करने का जो मार्ग ठहराया है, वह यह है: वह एक को भेजता है जो "उसके लोगों को उनके पापों की क्षमा के द्वारा उद्धार का ज्ञान दे। यह हमारे परमेश्वर की अपार करुणा के कारण है।" (लूका 1:77–78)। हम सबमें यह प्रवृत्ति होती है कि हम नए नियम में वही पढ़ते हैं जो हमें प्रिय लगता है। हमें अच्छा लगता है जब हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर में "अपार करुणा" है। जब परमेश्वर का क्रोध, परमेश्वर की पवित्रता और परमेश्वर की धार्मिकता का उल्लेख होता है, तो कोई न कोई अवश्य कहता है, "परन्तु मेरा परमेश्वर तो प्रेम का परमेश्वर है।" लोग यह विचार कहाँ से लाते हैं? आप इसे संसार को देखकर नहीं पा सकते, क्योंकि जहाँ भी हम देखते हैं, वहाँ हम प्रकृति की विनाशकारी शक्ति और मानवता में अन्याय तथा पाप के स्पष्ट प्रमाण देखते हैं। वरन नए नियम से ही

हम परमेश्वर के प्रेम को जान पाते हैं। परमेश्वर का प्रेम, उसकी गहरी करुणा में, सबसे स्पष्ट प्रकट होता है, जिसके द्वारा वह अपनी पवित्रता, न्याय और क्रोध से बच निकलने का मार्ग देता है। हम असत्य और बेईमानी करते हैं जब हम अपने प्रतिबिंब के अनुसार एकपक्षीय परमेश्वर बना लेते हैं, जब हम नए नियम के अनुसार उसकी कोमलता, प्रेम और दया के वर्णनों को चुनते हैं और उसके न्याय और क्रोध के स्पष्ट कथनों को अनदेखा या कम करके आँकते हैं।

जब हम परमेश्वर के क्रोध का इंकार करते हैं, तो हम उसकी क्षमा की अद्भुतता को घटा देते हैं, क्योंकि यदि कोई भय ही नहीं है, तो हमें क्षमा की आवश्यकता भी नहीं है। वह यहूदी जिसने अपने आपको व्यवस्था और परमेश्वर की पवित्रता के सन्दर्भ में देखा—जिसने गम्भीरता से इस तथ्य को माना कि परमेश्वर हमारे अपराधों से गहरी रीति से और बारम्बार अप्रसन्न होता है—वह परमेश्वर की पवित्रता के सामने काँपता था। जब उसने यह सन्देश सुना कि परमेश्वर ने अपनी कोमल करुणा से पापों की क्षमा का मार्ग ठहराया है, तो इस यहूदी ने भी जकर्याह के समान उद्धार का गीत गाया। ऐसे यहूदी ने ही पुराने नियम में बारम्बार दोहराया कि "यहोवा से उद्धार" है (विलाप. 3:26)।

फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट ने कहा: "हमें केवल डर से ही डरना चाहिए।" यह सुन्दर वक्तव्य तो है, परन्तु यह सत्य नहीं है। डर से बढ़कर और भी बहुत कुछ है जिससे डरना चाहिए। जो वास्तव में पवित्र और भयानक है, उसके

प्रति ऐसा स्वस्थ भय भी होता है, परन्तु हमारा समाज सोचता है कि यदि आपको परमेश्वर का भय है, तो आपमें कुछ त्रुटि है। मैं यहाँ भय का अर्थ केवल आदर या श्रद्धा के अर्थ में नहीं ले रहा हूँ; मैं उस ठण्डे, नग्न भय की बात कर रहा हूँ कि कैसे परमेश्वर हमें दण्डित कर सकता है। हम परमेश्वर के भय को वैध ठहराने की कोशिश से बचते हैं।

हम अपने अन्तर्मन की गहराई में जानते हैं कि शीघ्र या देर से, हम सब परमेश्वर की उपस्थिति में लाए जाएँगे और अपने जीवन का हिसाब देंगे। हम सब। यदि यीशु ने कुछ प्रचार किया, तो उसने निर्णायक और अन्तिम न्याय के विचार का प्रचार किया—न्याय जो धार्मिकता के अनुसार, सत्य के अनुसार और पवित्रता के अनुसार होगा, एक ऐसा न्याय जो पूर्णतः निष्कपट होगा, अपनी निष्पक्षता में निर्दोष होगा और सर्वसम्पूर्ण होगा। यही वह बात है जिससे हम डरते हैं। हम सबके जीवन में कुछ ऐसी बातें हैं, कुछ ऐसे विचार, या व्यक्तित्व के कुछ ऐसे अंश हैं, जिनके लिए हम आशा करते हैं कि वे कभी उजागर न हों। हमें अपनी लज्जा के प्रकट हो जाने का भय है।

परमेश्वर हमें भयानक इसलिए लगता है क्योंकि वह अपरिवर्तनशील है; उसकी पवित्रता स्थिर है। हम अपने नैतिक मानदण्डों को अपनी भावनाओं या नई जानकारी के आधार पर बदल लेते हैं। परन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं है। दिन-प्रतिदिन उसकी धार्मिकता बिना परिवर्तन, बिना समझौते के बनी रहती है।

परमेश्वर की व्यवस्था नहीं बदलती। परमेश्वर इसे हमारे स्तर पर नहीं लाता, चाहे हम ऐसा चाहते हों। इसके विपरीत, परमेश्वर ने उस व्यवस्था के न्याय को अपने इकलौते पुत्र ख्रीष्ट पर डाला।

यह बताना कठिन है कि सर्वोच्च अर्थ में उद्धार पाना, अर्थात छुड़ाए जाने का परम अर्थ क्या है। छुड़ाए जाने का अर्थ है कि आपका परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध सुलझ गया है। इसका अर्थ यह नहीं कि आप पाप करना बन्द कर देते हैं, परन्तु आपने परमेश्वर से मल्लयुद्ध किया है और उसके न्यायासन के सामने आपकी स्थिति ख्रीष्ट के कार्य द्वारा सुनिश्चित हो गई है। याकूब की तरह आप लंगड़ाते हुए तो लौटते हैं क्योंकि आप हार गए हैं, परन्तु आप छुड़ाए गए बनकर लौटते हैं क्योंकि आप क्षमा किए गए हैं। यही मसीही विश्वास में उद्धार के विषय का सार है: कि ख्रीष्ट ने हमें परमेश्वर के क्रोध के स्पष्ट और घातक भय से छुड़ाया है। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के पास आता है, पापों की क्षमा के लिए ख्रीष्ट पर विश्वास करके और उसी में विश्राम करके और उस सम्बन्ध के पुनःस्थापन का अनुभव करता है, तब वह उद्धार का आनन्द जानता है।

हमने इस प्रश्न से आरम्भ किया था कि: "उद्धार क्या है?" इससे सम्बन्धित प्रश्न यह है: "क्या आप उद्धार पाए हैं?" यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका हम सामना करेंगे। यदि हम इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में दे सकते हैं, तो हम वह शान्ति जानते हैं जो ख्रीष्ट में है और जिसका उल्लेख नया नियम

करता है। यदि हम इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में नहीं दे सकते हैं, तो हम अब भी भय, थरथराहट, असमंजस और अनिश्चितता की स्थिति में हैं—यह नहीं जानते हुए कि परमेश्वर के समक्ष हमारी दशा क्या है, तो भी निश्चित रूप से मन ही मन जानते हुए कि परमेश्वर के सामने हमारी दशा क्या है और हम उसे नापसन्द करते हैं। हर किसी को इस प्रश्न का उत्तर देना ही होगा।

अध्याय तीन

कलीसिया

The Church

नए नियम में "कलीसिया" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द *इक्लेसिया* है। यह एक संयुक्त शब्द है जिसमें एक उपसर्ग और एक मूल है। उपसर्ग *इक* का अर्थ है "बाहर" या "से," और मूल *कालेयो* का अर्थ है "बुलाना।" इस प्रकार जबकि *इक्लेसिया* का सीधा अर्थ "कलीसिया" है, इसमें यह भाव भी निहित है कि यह "बाहर बुलाए गए लोगों" को दर्शाता है। यह एक "सभा" को इंगित करता है, जिन्हें एक बड़े समूह से बाहर जमा होने के लिए बुलाया गया है।

वे किससे बाहर बुलाए गए हैं? पवित्रशास्त्र में सामान्य भाव यह है कि कलीसिया संसार से बाहर बुलायी गई है। यह *संसार* किसी भौगोलिक क्षेत्र के

दृष्टि से नहीं है, बल्कि शरीर के *संसार* के दृष्टि से है। यह वर्तमान समय, वर्तमान पीढ़ी, वर्तमान संस्कृति, वर्तमान जीवनशैली है। यह वह क्षेत्र है जिसमें लोग परमेश्वर के अधिकार के अधीन नहीं हैं। परमेश्वर के लोग धर्मनिरपेक्षता से, इस समय से, इस युग से बाहर बुलाए गए हैं ताकि वे परमेश्वर के साथ एक विशेष और अनोखे संबंध में भाग लें। जैसे परमेश्वर ने अब्राहम को कसदियों के ऊर देश से बुलाया कि उसे एक महान जाति का पिता बनाए और जैसे उसने इस्राएल को मिस्र से बाहर बुलाया, वैसे ही वह नए नियम की मण्डली को इस युग और इस संसार से बाहर बुलाता है।

ध्यान दीजिए कि हम कितनी बार पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की बुलाहट का उल्लेख सुनते हैं। हम बाइबल में पहली बार किसी वस्तु को परमेश्वर द्वारा अधिकारपूर्वक बुलाए जाने का विचार कहाँ पाते हैं? सृष्टि के प्रारम्भ में ही, एक बुलाहट है। सृष्टि में परमेश्वर की बुलाहट कार्य कर रही है और संचालित हो रही है। यह कैसी बुलाहट है? क्या यह केवल एक आमंत्रण है? क्या परमेश्वर केवल इतना कहते हैं, "संसार, कृपया अस्तित्व में आओ"? नहीं, वह अपने वचन की शक्ति से संसार को अस्तित्व में बुलाते हैं। यह एक अधिकारपूर्ण बुलाहट, एक सम्प्रभुत्व वाली बुलाहट, एक प्रभावशाली बुलाहट है; जिसे परमेश्वर बुलाते हैं, वह अस्तित्व में आता है। नया नियम सृष्टि की बुलाहट और परमेश्वर के लोगों की बुलाहट के बीच एक उपमा देता है। पौलुस कहते हैं, "फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी

है।" (रोमियों 8:30)। पुराने नियम में, परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र देश से बाहर बुलाया, उसने उस प्रजा को एक जाति के रूप में उत्पन्न किया या गठन किया और उनसे कहा, "इसलिए तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।" (लैव्यव्यवस्था 11:45)। वह उन्हें अलग करता है। वह उन्हें पवित्र ठहराता है। वह उन लोगों को संसार के अन्य लोगों से भिन्न करता है। वे बाहर बुलाए हुए लोग, अलग किए हुए लोग हैं।

नए नियम में, वह बुलाहट अन्यजातियों के लिए पेश की गई है। परमेश्वर ने पुराने नियम में प्रतिज्ञा की थी—और वह नए नियम में दोहराई गई है—कि वह एक ऐसी प्रजा को "मेरी प्रजा" बुलाएगा, जो उसकी प्रजा नहीं थी। हम होशे की पुस्तक में पढ़ते हैं: "तथा जो मेरी प्रजा नहीं उस से कहूँगा 'तू मेरी प्रजा है!'" (होशे 2:23)। फिर पतरस इस पद को अन्यजातियों पर लागू करता है: "एक समय तुम तो प्रजा न थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो।" (1 पतरस 2:10)। उसी प्रकार, वह अन्यजातियों पर पवित्र होने, पवित्रीकृत किए जाने या अलग किए जाने की बुलाहट को लागू करता है: "परन्तु जैसे तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी समस्त आचरण में पवित्र बनो, क्योंकि यह लिखा है, 'तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।'" (1:15–16)। नए नियम में वे लोग जो *इक्लेसिया* में सम्मिलित हुए, विशेषकर वे जो अन्यजाति थे, वे परमेश्वर की प्रजा बन गए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपनी प्रजा कहा। वे लोग जो प्रजा नहीं थे, वे उसकी प्रजा बन गए। वे पवित्र ठहराए गए। यही हमारी—जो अन्यजाति हैं—विशेष संबंध है; हमें नए वाचा की

मण्डली अथवा नए नियम की कलीसिया में मिलाया गया है। हम वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है और उसके कार्य के लिये अलग किए गए हैं।

हम पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की बुलाहट को और भी कई प्रकार से कार्य करते हुए देखते हैं। मेरे प्रिय उदाहरणों में से लाज़र का मरे हुओं में से जिलाया जाना एक है। ख्रीष्ट लाज़र को मरे हुओं में से कैसे जिलाता है? क्या वह एक जीवनरक्षक प्रक्रिया *(CPR)* करते हैं या कोई ऐसा उपकरण का प्रयोग करते हैं जो हृदय की असामान्य और घातक लय को ठीक करता है *(defibrillator)*? नहीं, वह केवल बुलाता है। वह कहता है, "हे लाज़र, बाहर आ।" (यूहन्ना 11:43)। परमेश्वर की बुलाहट की शक्ति के द्वारा लाज़र मृतकों में से जीवित हो गया। पौलुस इसका उल्लेख करता है जब वह परमेश्वर को "जो मृतकों को जिलाता है और जो वस्तुएँ हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है मानो वे हैं।" (रोमियों 4:17)। परमेश्वर एक नई प्रजा को अस्तित्व में बुलाता है; वह उन लोगों को जीवन के प्रभु के साथ एक विशेष सम्बन्ध में लाता है। वे लोग जो विश्वास द्वारा जीवन के प्रभु के साथ जोड़े गए हैं, वे *इक्लेसिया* हैं, वे जो बाहर बुलाए गए हैं—परमेश्वर की सन्तान बनने को बुलाए गए हैं, ख्रीष्ट के चेले बनने को बुलाए गए हैं, एक विशेष कार्य और विशेष उद्देश्य के लिये बुलाए गए हैं।

यह कारण है कि बाइबलीय "बुलाहट" का विचार अपने साथ उत्तरदायित्व और कार्य का भाव लिए हुए है। जिन लोगों को बाहर बुलाया गया है, उन्हें किसी कारण के लिए बुलाया गया है। उन्हें एक विशेष कार्यभार पूरा

करने के लिए दिया गया है। यहाँ तक कि सांसारिक जगत में भी, किसी व्यक्ति का जीवन-कार्य, या नौकरी या व्यवसाय अंतर्निहित रूप से इसी मूल सिद्धांत पर आधारित होता है। हम किसी के काम को उसकी *बुलाहट (vocation)* कहते हैं, जो लैटिन शब्द से आया है जिसका अर्थ है "बुलाना।" वोकेशन का अर्थ है एक बुलाहट और यह शब्द उस समय से सम्बन्ध रखता है जब लोग सोचते थे कि उनके सारे काम ईश्वर की बुलाहट समझे जाएँ—एक पूरा किया जाने वाला कार्य, सृष्टि को सँभालने का उत्तरदायित्व। उसी प्रकार, कलीसिया का भी एक वोकेशन है। कलीसिया को पूरा करने के लिए एक उद्देश्य दिया गया है।

इक्लेसिया "कलीसिया" के लिए नए नियम का शब्द है, परन्तु हमें "चर्च" शब्द कहाँ से मिला? इस शब्द का समतुल्य शब्द अन्य भाषाओं में भी है। जर्मन भाषा में इसे *Kirche* कहते हैं, स्कॉटिश अंग्रेज़ी में *kirk*, डच भाषा में *kerk*, स्वीडिश में *kerka*। ये सारे शब्द एक ही मूल से आए हैं—यूनानी शब्द *कुरियाकॉन (kyriakon)* से। यह शब्द *कुरिऑस (kyrios)* से सम्बन्धित है, जिसका अर्थ है "प्रभु।" नए नियम में यह यीशु को दिया गया सर्वोच्च उपाधि है। *कुरिऑस* वह नाम है जो हर नाम से बढ़कर है। यह ख्रीष्ट की राजसी उपाधि है। प्रारम्भिक कलीसिया का पहला अंगीकार था—*Iēsous ho Kyrios*—"यीशु प्रभु है।" इस प्रकार *कुरियाकॉन* यह इंगित करता है—जो प्रभु का है, जो *कुरिऑस* के हैं। जो कोई भी *कुरिऑस* का है, वह *कुरियाकॉन* अर्थात कलीसिया का सदस्य है और इस प्रकार कलीसिया

ख्रीष्ट के अधिकार के अधीन है। वे सब लोग जो ख्रीष्ट के हैं, वे कलीसिया—अर्थात *कुरियाकॉन*—को गठित करते हैं।

नए नियम में ख्रीष्ट और उसकी कलीसिया के संबंध को अत्यंत निकट और व्यक्तिगत शब्दों में प्रकट किया गया है, यहाँ तक कि कलीसिया को ख्रीष्ट की "देह" कहा गया है (इफि. 1:23)। एक उल्लेखनीय अवसर पर हम ख्रीष्ट और कलीसिया की इस आत्मिक एकता को अत्यंत मार्मिक और नाटकीय रीति से देखते हैं—यह दमिश्क के मार्ग पर शाऊल का परिवर्तन है। शाऊल मसीही लोगों को सताता रहा था और दमिश्क जा रहा था ताकि अपना कार्य वहाँ जारी रखे, तभी उसने एक चौंधिया देने वाले प्रकाश को देखा और ख्रीष्ट की वाणी सुनी। ध्यान दीजिए कि ख्रीष्ट ने शाऊल से क्या कहा: "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरित. 9:4)। ख्रीष्ट, शाऊल से यह नहीं पूछता है कि वह उसके लोगों को क्यों सताता है, या उसकी कलीसिया को या मसीहियों को। उसने कहा: "तू मुझे क्यों सताता है?" वह ऐसा क्यों कह रहा है? क्योंकि यीशु खड़ा रहकर और अपने लोगों के साथ स्वयं की पहचान कराता है, ताकि उसके लोगों और उसकी कलीसिया का सताव वास्तव में उसका सताव है—क्योंकि उसने स्वयं को अपने लोगों के साथ एक कर लिया है (यूह. 17 देखें)।

नया नियम हमें सिखाता है कि कलीसिया उन लोगों से बनी है जो ख्रीष्ट के साथ घनिष्ठ और व्यक्तिगत एकता में हैं। प्रेरितों का विश्वास-वचन कहता है: "मैं विश्वास करता हूँ ... संतों की संगति" पर। संतों की संगति वह समुदाय

और सहभागिता है जिसका आनन्द उन लोगों के बीच लिया जाता है जिन्हें नए नियम में *हागियोई (hagioi)* कहा गया है—अर्थात "संत" या "पवित्र जन।" दुर्भाग्यवश, कलीसिया के इतिहास में बार-बार कुछ विशेष रूप से धर्मी या पवित्र व्यक्तियों को "संत" कहने और सामान्य विश्वासियों से उन्हें अलग करने की प्रवृत्ति रही है। रोमन कैथोलिक कलीसिया में "संत" वह समझा जाता है जिसने अत्यधिक कार्य *(supererogation)* किए हों, ऐसे कार्य जो परमेश्वर के सामने धर्मी होने के लिए आवश्यक कार्यों से भी आगे हों। रोमन कैथोलिकवाद संतों की वन्दना के लिए प्रसिद्ध है, परन्तु आपको रोमन कैथोलिक होने की आवश्यकता नहीं है ताकि आप इस प्रकार की भाषा का प्रयोग कर सकें। हम भी कहते हैं कि अमुक व्यक्ति "वास्तव में संत" है—और उसका अर्थ यह होता है कि वह व्यक्ति अपनी भक्ति और मसीही चरित्र में अत्यंत श्रेष्ठ है।

पौलुस अपनी पत्रियों का आरम्भ प्रायः "संतों" के अभिवादन के साथ करता है जो विभिन्न नगरों में थे। इस अभिवादन के पश्चात् इन लोगों को झगड़ा न करने, झूठे शिक्षकों का पीछा न करने इत्यादि का निर्देश दिया जाता है। वे कैसे "पवित्र जन" हो सकते हैं यदि वे इन पापमय व्यवहारों में लगे हुए हैं? इसका कारण यह है कि संतों की संगति केवल किसी विशिष्ट मसीही वर्ग की सहभागिता का आनन्द नहीं है; संतों की संगति वह सहभागिता है जो उन सब के साथ स्थापित की गई है जिन्हें अलग किया गया है—जिन्हें ख्रीष्ट में

पवित्र कहा गया है। नए नियम में सामान्य विश्वासियों को भी "संत" कहा गया है। संतों की संगति उन सब की संगति है जिन्हें अलग किया गया है—वे सब जो पवित्र किए गए हैं—और वे सब जो ख्रीष्ट में हैं।

फिर भी, संतों की संगति केवल उन्हीं की सहभागिता नहीं है जो जीवित और ख्रीष्ट में हैं। हम विश्वासी, उन सब के साथ भी जुड़े हैं जो मर चुके हैं और ख्रीष्ट में हैं। जिस प्रकार हम ख्रीष्ट के साथ एक रहस्यमय सम्बन्ध में हैं, उसी प्रकार वे अन्य संतों के साथ एक रहस्यमय संबंध में हैं और इस रीति से हम भी उन सब के साथ आत्मिक सहभागिता में हैं। यह संबंध तब भी नहीं टूटता जब कोई मसीही व्यक्ति मर जाता है। ऑगस्टीन आज भी ख्रीष्ट के साथ सहभागिता में है। अब्राहम, यहोशू, दाऊद और पौलुस आज भी ख्रीष्ट के साथ सहभागिता में हैं। हम सब सामूहिक रीति से युगों की कलीसिया के साथ जुड़े हुए हैं। मृत्यु उस संगति को नष्ट नहीं कर सकती जो हमें परमेश्वर के लोगों में मिलती है।

कलीसिया को ख्रीष्ट की देह भी कहा जाता है। पौलुस हमारे लिए इस चित्र को विस्तार से समझाता है। यह चित्र इस तथ्य पर ध्यान दिलाता है कि कलीसिया लोगों की एक एकीकृत देह है, जो अनेक प्रकार की प्रतिभाओं, वरदानों और जिम्मेदारियों से बनी है। कलीसिया उतनी एक "संगठन" नहीं है (यद्यपि उसमें संगठन है), जितनी कि यह एक सजीव देह *(organism)* है, जिसमें प्रत्येक सूक्ष्म और आवश्यक अंग पूरे के लिए योगदान देता है।

पौलुस यह कहकर और समझाता है कि प्रत्येक अंग को दूसरे अंग की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, नाक कान से यह नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं" (1 कुरि. 12:12–31 देखें)। आत्मा के भिन्न-भिन्न वरदान हैं, भिन्न-भिन्न कार्य हैं और भिन्न-भिन्न जिम्मेदारियाँ हैं। कलीसिया में कोई भी अपने आप में पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं है। हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है। प्रत्येक मसीही व्यक्ति को उसका विशेष वरदान और उसका विशेष कार्य दिया गया है और हमें किसी वरदान को दूसरे वरदान से ऊँचा नहीं ठहराना चाहिए। नए नियम में हमें बताया गया है कि हम अपने वरदानों को सर्वोच्च अधिकार या महत्व के स्तर तक न बढ़ाएँ, परन्तु कलीसिया का प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर से इस उद्देश्य से वरदान पाता है कि वह ख्रीष्ट की देह के भीतर एक विशेष कार्य को पूरा करे। जिस प्रकार स्वाभाविक रीति से हमारे शरीर के प्रत्येक अंग अपना विशेष कार्य करते हैं, उसी प्रकार ख्रीष्ट की देह भी कार्य करती है। हमारे शारीरिक अंग अपने कार्यों को शेष देह से अलग होकर नहीं पूरा करते और न ही ख्रीष्ट की देह के सदस्य अपने कार्यों में एक-दूसरे से पृथक हैं। देह को आपसी आदान-प्रदान और एक-दूसरे पर निर्भरता के साथ मिलकर कार्य करना होता है, ताकि विविधता और एकता दोनों बनी रहें।

इस प्रकार हम नए नियम में कई चिह्न पाते हैं—कलीसिया परमेश्वर के बुलाए हुए लोगों की सभा है, जो प्रभु के हैं, संतों की संगति है और ख्रीष्ट की देह है। नए नियम में हमें ये सब चिह्न और अन्य भी मिलते हैं।

अध्याय चार

मिशन

Mission

मिशन्स *(missions)* अर्थात् सुसमाचार-प्रसार कार्य का सम्बन्ध भेजे जाने से है। हम पुराने नियम में बहुत आरम्भ से ही भेजे जाने की यह धारणा पाते हैं। और सामान्यतः परमेश्वर ही है जो भेजता है।

हम उत्पत्ति 12 में देखते हैं कि परमेश्वर ने अब्राम पर अपने आपको प्रकट किया और अब्राम से कहा कि वह उन सब वस्तुओं को छोड़ दे जो उसके लिए अर्थपूर्ण थीं अर्थात्—उसके मित्र, उसकी सुरक्षा, उसका घर, उसका राष्ट्र—और उस देश में चला जाए जिसे वह उसे दिखाएगा। एक मूर्तिपूजक समाज के बीच से परमेश्वर ने अब्राम को बुलाया और उसे एक अपरिचित और परदेशी देश में भेज दिया। जब परमेश्वर ने उसे वहाँ भेजा, तो उसने अब्राम से—जो बाद में अब्राहम कहलाया—प्रतिज्ञा की कि वह उसे एक बड़ी जाति का पिता बनाएगा और उसके सन्तानों को आकाश के तारों और समुद्र की रेत

के समान असंख्य कर देगा। परमेश्वर अब्राहम से प्रतिज्ञा करता है कि उससे वह उत्पन्न होगा जो संसार का उद्धारकर्ता होगा। इस प्रकार पहले परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पास बुलाया, परन्तु फिर उसे विशिष्ट कार्य *(mission)* के लिए भेजा।

यीशु को यह कहते हुए सुनना सबको अच्छा लगता है, "हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओः मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।" (मत्ती 11:28)। परन्तु हमें कठिनाई तब होती है जब वह, "जाओ" कहता है।

बाइबलीय अर्थ में, *मिशन (mission)* शब्द का सम्बन्ध बुलाहट या सेवा-आह्वान की धारणा से जुड़ा हुआ है। नबी यिर्मयाह के लिए परमेश्वर द्वारा बुलाहट पर विचार कीजिए। हम यिर्मयाह की पुस्तक के पहले अध्याय में पढ़ते हैं कि "यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: गर्भ में तेरी रचना करने से पूर्व मैं तुझे जानता था और तेरे उत्पन्न होने से पहले मैंने तेरा अभिषेक किया। मैंने तुझे जाति जाति के लिए नबी नियुक्त किया है।" (यिर्म. 1:4-5)। परमेश्वर ने यिर्मयाह को बुलाया और कहा कि वह उसे गर्भ में रचे जाने से पहले ही जानता था। परमेश्वर उसका नाम जानता था; उसकी नियति जानता था। जन्म लेने से पहले ही परमेश्वर ने उसे पवित्र ठहराया और उसे एक विशिष्ट कार्य *(mission)* के लिए अलग किया: कि वह राष्ट्रों के लिए नबी होगा।

हम यिर्मयाह के समान नबी तो नहीं हैं, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम सब उसी विशिष्ट कार्य *(mission)* की धारणा में भाग नहीं लेते हैं। हम कभी न कभी यह सोचते हैं कि हम इस संसार में क्यों हैं, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है। परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को किसी विशेष समय पर पृथ्वी

पर किसी कारण से रखा है। वह अपने संसाधनों को व्यर्थ नहीं करता है। वह पूर्ण और सिद्ध प्रबन्धक का आदर्श है और हम सब उसी भण्डारीपन के भाग हैं। परमेश्वर के पास हम में से प्रत्येक के लिए एक विशिष्ट कार्य *(mission)* की योजना है और हमें यह खोजना है कि वह क्या है। यिर्मयाह ने अपने सुसमाचार-प्रचार-प्रसार से संघर्ष किया। हर कोई समय-समय पर इसके साथ संघर्ष करता है। तथापि, परमेश्वर हम सबको किसी न किसी बात के लिए बुलाता है और हमें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए सामर्थ्य देता है, यह प्रतिज्ञा करते हुए, कि "मैं तुम्हारे साथ हूँ" (मत्ती 28:20)।

मत्ती 28 के महान् आदेश में ख्रीष्ट ने अपने चेलों को संसार में अपने राज्य की गवाही देने के लिए भेजा। उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे जाएँ और सब जातियों को बपतिस्मा और शिक्षा दें। परन्तु उस सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* के साथ, उस भेजे जाने के साथ, ख्रीष्ट की उपस्थिति की प्रतिज्ञा भी हमें दी गई है।

मेरे प्रिय बाइबल के खण्डों में से एक यशायाह 6 है, जहाँ नबी स्वर्गीय सिंहासन-कक्ष में परमेश्वर का दर्शन देखता है। वह सराफों को यह घोषणा करते हुए सुनता है कि "सेनाओं का यहोवा, पवित्र, पवित्र, पवित्र है! सम्पूर्ण पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।" (पद 3)। अचानक यशायाह को अपने पाप का बोध होता है और वह पुकार उठता है: "मुझ पर हाय, मैं तो नाश हुआ, क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ, मैं अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ" (पद 5)। परमेश्वर उस व्याकुल नबी के पाप के प्रायश्चित का प्रबन्ध, एक जलते अंगारे के द्वारा जो उसके होंठों को छूता है, करता है। फिर परमेश्वर

पुकारता है, "मैं किसको भेजूँ और हमारी ओर से कौन जाएगा?" और यशायाह उत्तर देता है: "मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज" (पद 8)। यशायाह जानता था कि वह कौन है। वह जानता था कि वह कितना अयोग्य है, परन्तु उसने कहा कि वह जाएगा।

सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* की धारणा नए नियम में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचती है। यूहन्ना 3:16-17 घोषणा करता है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत को दोषी ठहराए, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।" परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। उसने उसे दण्डादेश के लिए नहीं भेजा। उसने उसे प्रतिशोध लेने के लिए ईश्वरीय क्रोध के कार्य के रूप में नहीं भेजा। उसने अपने पुत्र को जगत की छुड़ौती के लिए भेजा। यही यीशु की बुलाहट थी। वह जगत का उद्धार करने आया। उसने उस सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* के प्रति आज्ञाकारिता दिखाई और उसके सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* सम्पूर्ण नए नियम को चिह्नित करते हैं।

हम इस विषय को लूका 10 में पाते हैं: "इसके पश्चात् प्रभु ने सत्तर अन्य व्यक्तियों को नियुक्त किया और उन्हें अपने आगे दो दो करके प्रत्येक नगर और स्थान को भेजा जहाँ वह स्वयं जाने पर था। उसने उनसे कहा, 'फसल तो बहुत खड़ी है, पर मज़दूर थोड़े हैं, अतः खेत के मालिक से विनती करो कि वह अपने खेत में मज़दूरों को भेजे। जाओ। देखो, मैं तुम्हें मेमनों के समान

भेड़ियों के मध्य भेजता हूँ।'" (पद 1-3)। कभी-कभी मसीही लोग ऐसा व्यवहार करते हैं मानो उन्हें यह देखकर अचम्भा हो रहा हो कि संसार उन्हें ग्रहण नहीं करता और उनकी आज्ञाकारिता के लिए उन्हें प्रतिफल नहीं देता है। उन्हें आश्चर्य होता है कि उन्हें जीवन के मार्ग में सताव सहना पड़ रहा है। परन्तु किसने यह कहा था कि कुछ भिन्न होगा? यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें भेड़ों के बीच भेड़ियों के समान भेजता हूँ।" शिष्य यह सुनकर चकित हो सकते थे, यह सोचते हुए कि वे तो वध होने जा रहे हैं। परन्तु इनकार करना, परमेश्वर के मेम्ने, जो "वध के लिए पहुँचाया गया", के सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* में भाग लेने से विफल होना था (देखें यशा. 53:7)। जब यीशु ने चेलों को नियुक्त किया, तो वह उनसे ऐसा कुछ नहीं करने को कह रहा था, जो उसने स्वयं न किया हो।

यीशु अपने पिता के मिशन-कार्य को पूरा करने के लिए उत्सुक था। उसने स्पष्ट किया कि, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करूँ और उसका कार्य पूरा करूँ" (यूह. 4:34)। यदि आप बाइबल के यीशु को समझना चाहते हैं, तो आपको उस चित्र को उसके अपने मिशन-कार्य की आत्म-चेतना के प्रकाश में देखना होगा। यही वह बुलाहट थी जिसके लिए उसे बुलाया गया था और वह कभी उस मार्ग से भटका नहीं। हममें से कौन ऐसा उत्साहपूर्ण रहा है?

यह सुनकर निराशा उत्पन्न होती है जब भले-भाव और सदोद्देश्य से भरे मसीही लोग, जो दूसरों को सुसमाचार की सच्चाई के प्रति मनाने में उत्सुक होते हैं, लोगों से कहते हैं कि यदि वे केवल यीशु के पास आ जाएँ, तो उनकी सारी

समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी। यीशु आपको धनी बना देगा; वह आपको सुखी बना देगा; वह आपके लिये ये सब बातें करेगा और आपको मन की शान्ति देगा। डायट्रिच बोन्होफ़र ने इसे "*सस्ता अनुग्रह*" कहा है। इस प्रकार का सुसमाचार प्रचार कभी शिष्योन्नति की लागत को नहीं बताता है।

आपका उद्देश्य *(mission)* क्या है? आप यहाँ किस लिये हैं? उन भले-भाव से भरे मसीहियों से सावधान रहें, जो यह सोचते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें जो दर्शन दिया है, या जिस सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* पर परमेश्वर ने उन्हें विशेष रूप से भेजा है, वह अनिवार्य रूप से आपका भी होना चाहिए। यही बात ख्रीष्ट की देह को तोड़ती है। वहाँ बाहर एक अत्यन्त विशाल सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* का क्षेत्र है और परमेश्वर ने मसीहियों को भिन्न-भिन्न वरदानों से भिन्न-भिन्न भूमिकाओं के लिये सुसज्जित किया है। जब वह मसीही लोगों पर अपना आत्मा उण्डेलता है, वह अपनी देह के प्रत्येक व्यक्ति को विभिन्न कार्यों के लिये वरदान देता है। वह भिन्न-भिन्न लोगों को भिन्न-भिन्न कार्य के लिये बुलाता है। परन्तु वे सब एक ही महान् सुसमाचार-प्रसार कार्य *(missions)* में एक साथ जुड़े हैं।

अध्याय पाँच

द्वितीय आगमन

The Second Coming

ख्रीष्ट की वापसी को *पारूसिया* भी कहा जाता है, जो नए नियम में ख्रीष्ट के प्रकट होने या प्रगटीकरण के लिए शब्द है। इसके विषय में प्रतिज्ञा की गई है कि यह युग के अन्त में होगा। ख्रीष्ट के दूसरे आगमन का अध्ययन ईश्वर-विज्ञान का क्षेत्र है जो संकटों से भरा हुआ है; यह विषय मसीही ईश्वर-विज्ञान के किसी भी अन्य भाग से अधिक विचित्र सिद्धान्तों से भरा विषय रहा है। यह अत्यधिक विवादास्पद भी है, क्योंकि अन्तिम बातों के सिद्धान्त से सम्बन्धित विषयों में मसीही लोगों के बीच घोर असहमतियाँ पाई जाती हैं।

क्योंकि ख्रीष्ट की वापसी पर सम्भवतः असंगत रूप से बहुत अधिक ध्यान दिया गया है और इसके विषय में अनेक सिद्धान्त गढ़े गए हैं, इस कारण बहुत

से लोगों ने इस विषय को त्रुटिपूर्वक यह सोचकर पूरी रीति से अनदेखा करने का निर्णय ले लिया है कि यीशु का दूसरा आगमन केवल मसीही कलीसिया के उन्मादी वर्ग *(the lunatic fringe)* की चिन्ता है या उन लोगों की जो अब भी बाइबल की बालसुलभ अथवा प्राचीन समझ से बँधे हुए हैं। वर्षों से इस विषय पर भविष्यवाणियाँ की गई हैं कि यीशु किसी निश्चित दिन लौटेगा और ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने उस घटना की प्रतीक्षा में अपने घर, अपने व्यवसाय, या अपने काम-धन्धे को भी छोड़ दिया। कलीसिया के इतिहास में विभिन्न अवसरों पर लोगों के पूरे समुदाय एकत्रित हुए हैं और अपनी सारी सांसारिक सम्पत्ति त्यागकर, यीशु के प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगे, परन्तु वे निराश हुए हैं।

फिर भी जब हम नए नियम के समीप आते हैं, तो इस सिद्धान्त को अनदेखा करना कठिन है। नए नियम की शिक्षाओं की विषयवस्तु का लगभग दो-तिहाई भाग किसी न किसी प्रकार से यीशु की *पारूसिया* से सम्बन्धित है। वास्तव में, यीशु का दूसरा आगमन नए नियम की शिक्षा में और विशेष रूप से यीशु की स्वयं की शिक्षा में एक केन्द्रीय स्थान रखता है। यदि हमें नए नियम की परिपक्व समझ प्राप्त करनी है, तो हमें यीशु के दूसरे आगमन की समझ रखनी ही होगी।

भिन्न-भिन्न कलीसियाएँ और भिन्न-भिन्न शिक्षक ख्रीष्ट के आगमन की विशिष्टताओं पर असहमत हो सकते हैं, परन्तु ऐतिहासिक रूप से प्रत्येक मसीही समुदाय ने यह अंगीकार किया है कि ख्रीष्ट की वापसी की प्रतिज्ञा गम्भीरता से लिया जाना चाहिए। हम सब सहमत हैं कि ख्रीष्ट फिर से आनेवाला है और कलीसिया का भरोसा इस विश्वास पर, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के कारण टिका है। हम विश्वास करते हैं कि यीशु लौटकर केवल इस कारण से आनेवाला है: क्योंकि उसने बिना किसी सन्देह के स्पष्ट रूप से कहा था कि वह लौटकर आएगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक ओर यह समय बड़े अविश्वास का है और दूसरी ओर यीशु की वापसी के प्रति अत्यधिक व्यस्तता भी है। जहाँ *द लेट ग्रेट प्लानेट अर्थ* और लेफ्ट बिहाइन्ड जैसी पुस्तकों की लाखों प्रतियाँ बिक चुकी हैं, तो दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि यीशु ने ये प्रतिज्ञाएँ बहुत पहले कर दी थीं, फिर भी वह अब तक नहीं लौटे हैं।

कुछ ने यह सुझाव दिया है कि कलीसिया संकट का सामना कर रही है क्योंकि यीशु ने नए नियम में स्पष्ट और निर्विवाद प्रतिज्ञा दी है, जिसे उन्होंने पूरा नहीं किया है। हम मान सकते हैं कि हमने उस प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए, लंबी प्रतीक्षा की है जितनी इस्राएलियों ने अब्राहम या दाऊद से की गई प्रतिज्ञाओं या पुराने नियम के आठवीं और सातवीं शताब्दी के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के लिए नहीं की थी। ऐसा लगता है कि यीशु ने वह

प्रतिज्ञा की जिसे उन्होंने पूरा नहीं किया, या कम से कम ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने उसे पूरा नहीं किया।

अन्यों ने यह दृष्टिकोण अपनाया है कि वह प्रतिज्ञा पूरी हो चुकी है, परन्तु न तो किसी स्थूल, स्पर्शनीय ढंग से और न ही किसी साधारण ऐतिहासिक रूप से। वरन् उनका दावा है कि यीशु की वापसी इतिहास की सामान्य समय-रेखा पर क्षैतिज रूप से नहीं, बल्कि ऊर्ध्वाधर रूप से, अस्तित्वात्मक रूप से, सम्भवतः रहस्यमय रीति से भी घटित होती है। जब आपका जीवन नियंत्रित है और आप यीशु के साथ एक प्रकार का अस्तित्वात्मक सम्बन्ध प्राप्त करते हैं, तब आपने व्यक्तिगत रूप से *पारूसिया* का अनुभव कर लिया है। इसी कारण, बीसवीं शताब्दी में हमारे पास विद्वानों का एक ऐसा वर्ग था जिन्होंने शास्त्रीय मसीही शिक्षा को अस्तित्ववाद से निकाली गई कुछ दार्शनिक शिक्षाओं से जोड़ा। यदि यही वह तरीका है जिससे हम यीशु की वापसी को समझते हैं, तो फिर हमें इतिहास की किसी भी अनिश्चितता से व्याकुल होने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु ऐसा करना, पवित्रशास्त्र की निरन्तरता और पुराने और नए नियम के आपसी सम्बन्ध को मूल रूप से अनदेखा करना है।

निश्चित रूप से, पुराने नियम की भविष्यवाणियों के प्रायः निहित आत्मिक अर्थ होते हैं, परन्तु सामान्यतः ये भविष्यवाणियाँ नए नियम में ठोस ऐतिहासिक अर्थों में पूरा होते दिखाया गया है। यीशु के जन्म पर विचार कीजिए। उसके माता-पिता नासरत में रहते थे, बैतलहम में नहीं। उसकी माता गर्भावस्था के अन्तिम चरण में थी और उन दिनों में गर्भावस्था के अन्तिम चरण में किसी

स्त्री के लिए लम्बी दूरी की यात्रा करना अत्यन्त कठिन बोझ होता था। परन्तु मरियम और यूसुफ़ ने नासरत से बैतलहम तक की कठिन यात्रा की क्योंकि सम्राट ने जनगणना का आदेश दिया था। हर किसी को अपने जन्मस्थान पर लौटकर गिने जाने के लिए आना था। और इस प्रकार यूसुफ़ और मरियम ने यात्रा की।

परन्तु ईश्वरीय-प्रावधान की दृष्टि से, मीका नबी ने सदियों पहले यह कहा था: "परन्तु हे बैतलहम एप्राता, यद्यपि तू यहूदा के कुलों में बहुत छोटा है, फिर भी मेरे लिए तुझ में से एक पुरुष निकलेगा जो इस्राएल पर प्रभुता करेगा। उसका निकलना प्राचीनकाल से वरन् अनादिकाल से है।" (मीका 5:2)। मीका ने स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की थी कि मसीह का जन्म बैतलहम में होगा। जब मसीह आया, तो वह इतिहास की इसी क्षैतिज रेखा पर आया। उसका जन्म कोई अस्तित्ववादी, रहस्यमय घटना नहीं थी। वह स्थान और समय में उपस्थित था।

युगों से, कलीसिया पुराने नियम में परमेश्वर के वचन और नए नियम में परमेश्वर के वचन के बीच ऐतिहासिक निरन्तरता की अनदेखी करने से बचा है। अधिकांश रूप से कलीसिया ने इस विचार पर दृढ़ता से पकड़ बनाए रखी है कि जब नया नियम यह कहता है कि यीशु उसी प्रकार वापस आएगा जैसे वह गया था, तो वह वास्तव में लौटेगा और उनका लौटना दृश्यमान होगा (प्रेरितों के काम 1:11 देखिए)। कोई इससे नहीं चूकेगा; हर एक आँख उन्हें देखेगी।

यही मसीही लोगों की धन्य आशा बनती है। इतिहास के अन्त में हम इसी की प्रतीक्षा करते हैं—राजा ख्रीष्ट का विजयपूर्ण पुनःआगमन, जो ख्रीष्ट के अदृश्य राज्य को दृश्यमान बनाएगा।

जब ख्रीष्ट यीशु आएगा, तो वह न्याय करने आएगा। वह अपने लोगों को, जो उनके प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं, निर्दोष घोषित करने आएगा। यह नए नियम के शिक्षाप्रद भागों में एक मुख्य विषय है। नए नियम के लेखक, विशेषकर प्रेरित पौलुस, बार-बार मसीही लोगों को विश्वास में दृढ़ता और धैर्य रखने के लिए बुलाते हैं। उदाहरण के लिए: "हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं, क्योंकि यह जानते हैं कि क्लेश में धैर्य उत्पन्न होता है, तथा धैर्य से खरा चरित्र और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है; आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है।" (रोमियों 5:3-5)। और: "इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमें घेरे हुए है, तो आओ, प्रत्येक बाधा और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर अपनी दृष्टि लगाए रहें, जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके सामने रखा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।" (इब्रानियों 12:1-2)। पत्रियाँ दृढ़ बने रहने और अटल खड़े रहने की आज्ञाओं से भरी हुई हैं। नए नियम में ये आज्ञाएँ क्यों दी गई हैं? क्या

आप सोचते हैं कि नए नियम के लेखक और विशेषकर परमप्रधान लेखक, अर्थात् पवित्र आत्मा, ने यह पूर्वानुमान किया था कि मार्ग में कुछ संघर्ष, लोगों को ठोकर खाने, दृढ़ता न रखने और हार मान लेने पर विचार करने का कारण बन सकते हैं? यीशु बार-बार हमें बलिदान देने के लिए, यहाँ पर नहीं वरन् स्वर्ग में धन इकट्ठा करने के लिए (मत्ती 6:20 देखिए) और अपने जीवन को वर्तमान के बजाय भविष्य के लिए समर्पित करने के लिए बुलाते हैं।

जब आप स्वयं को ख्रीष्ट को सौंपते हैं, तो आप अपना जीवन दे रहे होते हैं। आप एक ऐसा निर्णय कर रहे होते हैं जो संस्कृति की सलाह के विपरीत है। हमें कहा जाता है, "आप केवल एक बार जीते हैं" और "जब तक मिल रहा है, ले लो।" परन्तु यीशु हमें एक उत्तम नगर को खोजने के लिए कहता है। जब तक हम उस एक की प्रतीक्षा धैर्यपूर्वक करते हैं, जिसने अब तक अपना प्रकट होना विलम्बित किया है, तब तक संघर्ष होंगे। हम सोच सकते हैं कि क्या यह सब सार्थक है, या हमने कोई गलती तो नहीं की। हमें अपने आसपास के उन लोगों की उपेक्षा और उपहास भी सहना पड़ता है, जो यह सुनिश्चित मानते हैं कि हमने एक झूठ पर विश्वास कर लिया है और अपना जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। हमें सताव का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि हम संस्कृति के साथ नहीं चलते। इस प्रकार हम अपने राजा के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हैं, जो पृथ्वी का न्याय करने और अपने लोगों का निर्दोष ठहराने आता है।

लूका 18:1-8 में अन्यायी न्यायाधीश के दृष्टान्त पर विचार कीजिए। एक अड़ियल विधवा का मामला है, जिसे वह एक ऐसे न्यायाधीश के सामने लाती है जो न तो परमेश्वर से डरता है और न मनुष्य का सम्मान करता है। उस विधवा का कोई पहुँच नहीं था, फिर भी वह छुटकारा चाहती थी। परन्तु न्यायाधीश उसकी चिन्ता नहीं करता है। उसे न तो न्याय से मतलब था, न सत्य से और न ही परमेश्वर से। उसे निश्चित रीति से उस दुःखी विधवा की भी कोई चिन्ता नहीं थी, परन्तु विधवा हार मानने को तैयार नहीं थी। वह बार-बार उसके पास आकर विनती करती रही कि वह उसके मामले को सुने, उसका प्रतिपादन करे और उसे न्याय दिलाए। अन्त में केवल इस कारण से कि वह इस झंझटवाली स्त्री से छुटकारा पा सके, न्यायाधीश ने उसका मुकदमा सुना और उसके पक्ष में न्याय किया।

यीशु निष्कर्ष में कहता है: "तो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न करेगा जो रात-दिन उसे पुकारते रहते हैं? क्या वह उनके विषय में देर करेगा?" (पद 7)। दृष्टान्त का निष्कर्ष सरल है। यदि एक दुष्ट, भ्रष्ट, सांसारिक न्यायाधीश, जिसे किसी भी धार्मिक बात की चिन्ता नहीं है, कभी-कभी केवल स्वार्थवश न्याय करता है, तो स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर, जो पूर्ण रीति से धर्मी और सत्य है, निश्चय ही अपने लोगों के न्याय के लिए स्वर्ग और पृथ्वी को हिला देगा। यह सोचना भी असम्भव है कि एक पवित्र परमेश्वर अपने लोगों को अनन्तकाल तक बिना न्याय दिलवाए छोड़ देगा।

यीशु इस दृष्टान्त को एक ऐसे प्रश्न के साथ समाप्त करता है जो विचित्र लग सकता है। यह मानो दृष्टान्त की संरचना में ठीक से नहीं बैठता है। "फिर

भी मनुष्य का पुत्र जब आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?" (पद 8)। यीशु के लिए प्रश्न यह नहीं है कि परमेश्वर अपने निर्दोष ठहराने के वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा या नहीं। यीशु के मन में यह कभी नहीं आया कि वह अपने लौटने के वचन को पूरा नहीं करेगा। प्रश्न यह है कि जब वह लौटेगा तो क्या उसका स्वागत करने के लिए कोई बचा रहेगा। क्या पृथ्वी पर कोई विश्वास होगा और कोई ऐसा होगा जिसका प्रतिपादन किया जाए? हमें यह प्रश्न पूछना ही होगा ताकि हम इस तथ्य का सामना कर सकें कि वह अभी तक नहीं आया है।

यीशु ने कुछ अद्भुत भविष्यवाणियाँ कीं। जैतून पहाड़ी पर के उपदेश *(Olivet Discourse)* में उसने भविष्यवाणी की कि मन्दिर नाश कर दिया जाएगा, यहूदी निर्वासित कर दिए जाएँगे और यरूशलेम अन्यजातियों द्वारा कुचल दिए जाएँगे। और सन् 70 ई. में क्या हुआ? ठीक वही जो उसने भविष्यवाणी की थी। रोमियों ने आकर मन्दिर को नष्ट कर दिया और यहूदी सारे जगत में तितर-बितर हो गए। फिर भी उन्होंने अपनी पहचान कभी नहीं खोई। उन्होंने अपना देश खो दिया और दो हज़ार वर्षों तक वे हर फसह के पर्व के अन्त में यह उद्घोषणा करते रहे, "अगले वर्ष यरूशलेम में!"

दो हज़ार वर्षों तक यहूदी संसार भर में फैल गए और यरूशलेम का स्वप्न देखते रहे। सन् 1948 में उनकी आशा पूरी हुई जब वे पवित्र भूमि में आधुनिक इस्राएल राज्य के रूप में फिर से स्थापित हुए। कुछ लोगों ने उस घटना की ओर संकेत किया और कहा कि अब हम ख्रीष्ट की वापसी से पहले के अन्तिम चरण में हैं।

मार्टिन लूथर इस बात के प्रति पूर्ण आश्वस्त थे कि सोलहवीं शताब्दी के प्रतिक्रियात्मक धर्मसुधार आन्दोलन की उथल-पुथल के साथ ही वह अन्त समय में जी रहे थे और ख्रीष्ट का आगमन निकट था। अठारहवीं शताब्दी में नए विश्व *(New World)* के निर्माण के साथ जो घटनाएँ घट रही थीं, उनके बीच जोनाथन एडवर्ड्स भी उतने ही निश्चयपूर्वक मानते थे कि वे अन्तिम दिनों में जी रहे थे। फिर भी, जितने प्रतिभाशाली वे पुरुष थे, दोनों भूलचूक में थे। इसलिए ख्रीष्ट के लौटने की कोई तिथि तय करना मूर्खता ही प्रतीत होती है। परन्तु एक बात हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि हम यीशु की वापसी को लेकर लूथर से पाँच सौ वर्ष अधिक निकट हैं। हम एडवर्ड्स से ढाई सौ वर्ष अधिक निकट हैं। हर दिन जो बीतता है, वह हमें परमेश्वर और ख्रीष्ट की उस पूर्ण, अटल प्रतिज्ञा की पूर्ति के और अधिक निकट लाता है।

समय के अतिरिक्त, इस बात को लेकर भी बहुत उलझन है कि ख्रीष्ट के लौटने पर हमें क्या अपेक्षा करनी चाहिए। नए नियम में कई खण्ड इस विषय पर सीधे चर्चा करते हैं। पौलुस ने अपने थिस्सलुनीके की कलीसिया को लिखे गए पत्रों में इसका उल्लेख किया: "परन्तु हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में अनभिज्ञ रहो जो सो गए हैं और अन्य लोगों के समान शोकित होओ जो आशारहित हैं। हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा—इसलिए परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसके साथ ले आएगा।" (1 थिस्स. 4:13-14)। यदि हम ख्रीष्ट की मृत्यु पर विश्वास करते

हैं और यदि हम उसके पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं, तो हमें इस बात पर भी विश्वास करना होगा कि वह लौटेगा और जब वह लौटेगा, तो अपने साथ उन्हें ले आएगा जो ख्रीष्ट में मर चुके हैं। "इस कारण हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कदापि आगे न बढ़ेंगे।" (पद 15)। कलीसिया में इस विषय को लेकर उलझन थी कि जो लोग यीशु के लौटने से पहले मर जाते हैं, उनके साथ क्या होगा। क्या इसका अर्थ यह होगा कि वे चूक गए? नहीं; वास्तव में, जो लोग ख्रीष्ट के लौटने से पहले मर जाते हैं, वे पहले जी उठेंगे।

यीशु की वापसी को कोई भी नहीं चूकेगा। उसके सारे लोग उसे देखेंगे। वह धर्मी मृतकों को जिलाएगा, जैसे उसने लाजर को जिलाया था। वह उन्हें जिलाएगा और अपने साथ ले आएगा। पौलुस आगे इसका वर्णन करता है: "क्योंकि प्रभु स्वयं ललकार और प्रधान स्वर्गदूत की पुकार और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ स्वर्ग से उतरेगा और जो मसीह में मर गए हैं, वे पहिले जी उठेंगे। 17 तब हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे, उनके साथ हवा में प्रभु से मिलने के लिए बादलों पर उठा लिए जाएंगे। इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे।" (पद 16-17)। इसे ही लोग "मेघारोहण" या "*बादलों पर उठाया जाना*" *(rapture)* कहते हैं। ख्रीष्ट के लौटने के इस पहलू को लेकर भी मतभेद हैं। कुछ कहते हैं कि बादलों पर उठाया जाना "गुप्त" होगा, अर्थात् ख्रीष्ट स्वर्ग से आधे दूर अदृश्य रूप में आएगा और

अपने लोगों को इकट्ठा करके पृथ्वी से हटा ले जाएगा। कुछ लोग इस घटना की तिथि तथाकथित "महाक्लेश" *(Great Tribulation)* के सन्दर्भ में, जैतून पहाड़ी उपदेश *(Olivet Discourse)* और अन्य खण्डों के एक विशेष अनुवाद पर आधारित कर, तय करने का प्रयास करते हैं। परन्तु यह कहना कठिन है कि बादलों पर उठाया जाना गुप्त होगा, क्योंकि नए नियम में हमें बताया गया है कि उसे हर आँख देखेगी, वह स्वर्ग से पुकार के साथ घोषित होगा, परमेश्वर की तुरहियाँ फूँकी जाएँगी और प्रधान दूत पुकारेगा।

पौलुस की चिह्न-भाषा रहस्यमयी है, परन्तु यहाँ एक सुझाव है कि उनका क्या तात्पर्य हो सकता है। पौलुस प्रायः अपने ही परिवेश से उदाहरण लिया करता था। वह विशेष रूप से सैन्य चिह्नों का उपयोग करता था और उन्हें यीशु की विजय पर लागू करता था—कैदियों को बन्धन से निकालकर ले जाना, अपने शत्रुओं को जीतना, इत्यादि। प्राचीन संसार में, जब रोमी सेनाएँ विजय के लिए निकला करती थीं, तो वे प्रायः कई वर्षों तक अनुपस्थित रहती थीं।

जब कोई अभियान पूरा होता, तो सेनापति वापस अपनी सेना को रोम की सीमा तक ले आता। वहाँ वे जीते हुए सरदारों, राजाओं, राजकुमारों या योद्धाओं को जनप्रदर्शन यात्रा में बाँधकर लाते और जीते हुए राज्यों से लाए गए सभी धन भी साथ लाते। जब सब कुछ तैयार हो जाता, तब रोम के सभी नागरिक—जो कि नगर की कुल जनसंख्या का मात्र एक चौथाई होते थे—सेना के उस विजय समारोह में भाग लेने के लिए बुलाए जाते थे। यह ऐसा नहीं

था मानो लोग नगर में खड़े होकर विजयी नायकों की प्रतीक्षा कर रहे थे; बल्कि जब सब तैयारी हो जाती थी, तो नगर के बाहर के गायक और वादक तुरहियाँ और नगाड़े बजाकर विजय जनप्रदर्शन यात्रा के आरम्भ का संकेत देते थे और रोम के नागरिक, नगर में प्रवेश करती उस सेना से मिलने बाहर निकलते थे, जो नगर में मार्च करके प्रवेश करती थी। रोमी सेना की विजय वास्तव में रोमी जनता की ही विजय मानी जाती थी।

उसी प्रकार, जब पौलुस यीशु के महिमा के बादलों पर आने की बात करता है, तो वह कहता है कि हम प्रभु से आकाश में मिलने के लिए ऊपर उठाए जाएंगे, ताकि उनकी मण्डली में सम्मिलित हो जाएँ। हमें संसार से हटा नहीं लिया जाता, बल्कि हम उनकी विजयी यात्रा का अंग बन जाते हैं। यही वह प्रक्रिया है जिससे हमें निर्दोष ठहराया जाएगा; जब यीशु संसार का न्याय करने के लिए प्रकट होगा, तब हम उनके दल में होंगे।

नए नियम में यीशु की वापसी के सम्बन्ध में चिन्ता परिश्रम और सावधानी की है। नया नियम कहता है: "जागते रहो।" तैयार रहो। इसके लिए भयभीत न हो जाओ, परन्तु ऐसा जीवन जियो कि चाहे वह शीघ्र आए या विलम्ब करे, वह आपको बिल्कुल बिना तैयारी का न पाए। सावधानी ही कलीसिया के लिए बुलाहट है। हमें यीशु की वापसी के लिए तैयार रहना चाहिए। यह प्रत्येक मसीही और प्रत्येक मसीही समुदाय की, हर स्थान और हर युग में, ज़िम्मेदारी

है—हमारे राजा के आगमन के लिए तैयार रहना।

परमेश्वर की, यीशु की वापसी की प्रतिज्ञा में होने वाली देरी पर झुंझलाने से पहले इस पर विचार करें। यदि यीशु दस वर्ष पहले आ गया होता तो आपका क्या होता? यदि यीशु बीस वर्ष पहले आ गया होता तो आपका क्या होता? सम्भव है कि आप राज्य में न होते। आभारी रहें कि उसने आपके लिए प्रतीक्षा की। यदि आप परेशान हो रहे हो कि वह इतना समय क्यों ले रहे हैं, तो अपने उन प्रियजनों के विषय में विचार करें जो अभी तक उद्धार नहीं पाए हैं और परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह अपने लोगों के अन्तिम जन के आने तक प्रतीक्षा कर रहा है। इस बीच, सावधान रहें। हमें नहीं पता वह कब आएगा। परन्तु हमें यह अवश्य पता है कि वह आएगा, क्योंकि उसने कहा है कि वह आएगा।

लेखक के विषय में

डॉ. आर.सी. स्प्रोल लिग्निएर मिनिस्ट्रीज़ के संस्थापक, सेंट एंड्रयूज़ चैपल, सैनफोर्ड, फ्लोरिडा के संस्थापक पास्टर और रिफॉर्मेशन बाइबल कॉलेज के प्रथम अध्यक्ष और *टेबलटॉक* पत्रिका के कार्यकारी सम्पादक थे। उनका रेडियो कार्यक्रम *रिन्यूइंग योर माइंड* अभी भी संसार भर के सैकड़ों रेडियो स्टेशनों पर प्रतिदिन प्रसारित किया जाता है और ऑनलाइन भी सुना जा सकता है। वे एक सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक थे, जिनमें *द होलीनेस ऑफ गॉड, चोज़ेन बाय गॉड* और *सभी हैं ईश्वरविज्ञानी* सम्मिलित हैं। उन्हें संसार भर में पवित्रशास्त्र की अचूकता की सुस्पष्ट रक्षा तथा परमेश्वर के लोगों के लिए उसके वचन पर दृढ़ विश्वास के साथ खड़े होने की आवश्यकता के लिए पहचाना गया था।

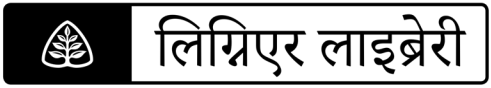

लिग्निएर मिनिस्ट्रीज़ एक अन्तर्राष्ट्रीय मसीही शिष्यता संस्था है जिसको डॉ आर.सी. स्प्रोल ने 1971 में संस्थापित किया था जिससे कि जितने अधिक लोगों तक सम्भव हो सके उन तक परमेश्वर की पवित्रता को उसकी पूर्णता में उद्घोषित करें, शिक्षा दें और रक्षा करें। लिग्निएर लाइब्रेरी की मोहर सम्पूर्ण विश्व तथा कई भाषाओं में विश्वसनीयता का चिह्न बन गयी है।

महान् आदेश द्वारा प्रेरित होकर, लिग्निएर, शिष्यता के संसाधन को छपे हुए तथा डिजिटल माध्यम से बाँटता है। विश्वसनीय पुस्तक, लेख और वीडियो शिक्षा श्रृंखला चालीस से अधिक भाषाओं में अनुवादित या रिकॉर्ड किए जा रहे हैं। हमारी अभिलाषा है यीशु ख्रीष्ट की कलीसिया का समर्थन करें मसीहियों की यह जानने में सहायता करने के द्वारा कि वे क्या विश्वास करते हैं, वे क्यों विश्वास करते हैं, उन्हें उसके अनुसार कैसे जीना चाहिए और उसे कैसे बाँटना चाहिए।

HI.LIGONIER.ORG

मार्ग सत्य जीवन

ऑडियो-वीडियो: भारत में कलीसिया की उन्नति के लिए हिन्दी में प्रचार एवं लेखों की ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग उपलब्ध हैं। इसका उद्देश्य है कि विश्वासी तथा कलीसियाएँ सुसमाचार एवं वचन की समझ में बढ़ें और विश्वास में परिपक्व हो सकें। आप इन्हें यूट्यूब youtube.com/@MargSatyaJeevan पर देख व सुन सकते हैं।

बाइबलीय लेख: margsatyajeevan.com/articles/ पर हिन्दी में खरी शिक्षा पर आधारित लेख उपलब्ध हैं। ये लेख वचन की मुख्य शिक्षाओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते हैं जिससे कि एक नया विश्वासी भी खरी शिक्षा के ज्ञान में वृद्धि करे और पवित्रता का जीवन जिए।

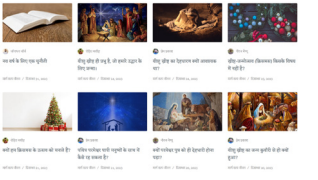

बाइबलीय पुस्तकें: हिन्दी में विश्वासयोग्य बाइबलीय पुस्तकों का अभाव होने के कारण, आपके लिए वचन पर आधारित पुस्तकों को उपलब्ध कराया गया है। आप margsatyajeevan.com/books/ पर कुछ योगदान देने के द्वारा पुस्तकों को प्राप्त कर सकते हैं। हमारी आशा है कि इनके द्वारा आप परमेश्वर के गुणों को देखेंगे, कलीसिया के महत्व को समझेंगे और ख्रीष्ट की समानता में बढ़ेंगे।

अधिक जानकारी के लिए:

फोन नम्बर: 9696110134
https://margsatyajeevan.com
ई-मेल: enquirymsj@gmail.com

यूट्यूब: Marg Satya Jeevan
इंस्टाग्राम: @margsatyajeevan
facebook.com/margsatyajeevann

सत्य वचन सेमिनरी

पास्टरीय सेवकाई के लिए प्रशिक्षण

वर्तमान समय में वचन पर आधारित कलीसियाओं की बड़ी आवश्यकता है और कलीसियाएँ वचन पर आधारित तब होंगी जब उनके अगुवे बाइबल के अनुसार योग्य तथा उपयुक्त रीति से प्रशिक्षित होंगे। सत्य वचन सेमिनरी इस उद्देश्य के लिए अस्तित्व में है कि पुरुषों को बाइबल के ज्ञान में, स्थानीय कलीसिया की समझ में, व्यावहारिक सेवा के अनुभव में और ख्रीष्टीय चरित्र में बढ़ाने के द्वारा कलीसियाओं की सहायता करे। यह तीन वर्षीय, आवासीय कार्यक्रम है जिसमें बी.टीएच. (B.Th.) और एम.डिव. (M.Div.) स्तर की पढ़ाई होती है।

सेमिनरी की कुछ विशेषताएँ:

- स्थानीय कलीसिया द्वारा संचालन
- कलीसिया के पास्टरों द्वारा निर्देशन
- स्थानीय भाषाओं में सेवा का प्रोत्साहन
- योग्यता-प्राप्त प्रोफेसरों द्वारा शिक्षण
- व्यावहारिक सेवकाई करने के अवसर
- सम्मेलनों/प्रशिक्षणों में जाने के अवसर
- ईश्वरविज्ञानीय पुस्तकालय की उपलब्धता

पाठ्यक्रम के कुछ विषय:

- पुराने नियम का सर्वेक्षण
- नए नियम का सर्वेक्षण
- विधिवत् ईश्वरविज्ञान
- बाइबलीय ईश्वरविज्ञान
- व्याख्याशास्त्र एवं उपदेश कला
- नए नियम में पुराने नियम का उपयोग
- विभिन्न बाइबलीय पुस्तकों का अर्थनिरूपण
- कलीसियाई इतिहास
- बाइबलीय परामर्श
- आपत्तिखण्डनशास्त्र
- अन्य धर्मों का अध्ययन
- बाइबलीय मूल भाषाओं (यूनानी एवं इब्रानी) का अध्ययन

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

+91 9450810781,

satyavachanseminary@gmail.com

www.svsem.org

सत्य वचन चर्च
पास्टरीय प्रशिक्षुता (इन्टर्नशिप)

परमेश्वर के वचन के अनुरूप पास्टरों की तैयारी के लिए, बाइबल के अध्ययन के साथ-साथ, व्यावहारिक सेवकाई में अनुभव तथा अनुभवी पास्टरों द्वारा शिष्योन्नति की आवश्यकता होती है। भावी पास्टरों में निवेश करने हेतु सत्य वचन चर्च का पास्टरीय प्रशिक्षुता कार्यक्रम पुरुषों को अवसर प्रदान करता है कि वे सत्य वचन चर्च के अगुवों की देख-रेख में स्वयं को सेवकाई के लिए तैयार कर सकते हैं। प्रशिक्षु सत्य वचन चर्च के सदस्य बनते हैं, कलीसिया के अगुवों के साथ समय व्यतीत करते हैं, पुस्तकों को पढ़ते हैं और विभिन्न प्रशिक्षणों में भाग लेते हैं।

प्रशिक्षुता की विशेषताएँ:

- वचन के ज्ञान में बढ़ना।
- पास्टरीय सेवा को निकटता से देखना।
- कलीसिया के जीवन में सम्मिलित होना।
- स्थानीय कलीसिया के महत्व को समझना।
- कलीसियाई सेवकाई के सौभाग्यों तथा चुनौतियों को निकटता से देखना।
- व्यावहारिक सेवकाई के अवसर।
- सेवकाई में पासबानों द्वारा निर्देशन।
- उत्साहवर्धक एवं सुधारात्मक टिप्पणियाँ प्राप्त करना।
- सम्मेलनों में भाग लेने के अवसर।
- भविष्य की सेवा से सम्बन्धित सम्मति प्राप्त करना।
- सम्भवतः कलीसिया द्वारा पुष्टि प्राप्त करके सेवकाई के लिए भेजा जाना।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

+91 86043 09392

आवासीय शिष्यता-कार्यक्रम

आवासीय शिष्यता-कार्यक्रम सत्य वचन चर्च की एक सेवा है जिसके द्वारा भविष्य में कलीसिया के स्वास्थ्य के लिए वर्तमान में जवान भाइयों में निवेश किया जाता है। इसका उद्देश्य है कि जवान भाई 3-4 वर्षों के लिए चर्च के साथ रहकर अपनी पढ़ाई के साथ-साथ वचन के ज्ञान और परिपक्वता में बढ़ें।

कौन भाग ले सकता है? यह कार्यक्रम जवान ख्रीष्टीय पुरुषों के लिए है जो बारहवीं की पढ़ाई कर चुके हैं, स्नातक की पढ़ाई करना चाहते हैं, तथा जिनका परिवार और कलीसिया उनके इस कार्यक्रम में भाग लेने के समर्थन में हैं।

लक्ष्य: आशा है कि इस कार्यक्रम के द्वारा भाई:

i. परमेश्वर के वचन के ज्ञान और ख्रीष्टीय परिपक्वता में बढ़ेंगे।

ii. ख्रीष्टीय अगुवाई तथा कलीसियाई सेवकाई के लिए उत्साहित होंगे।

iii. अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी करेंगे।

iv. व्यावहारिक प्रतिभाओं तथा योग्यताओं में बढ़ेंगे। (अंग्रेजी बोलना, कम्प्यूटर चलाना, गाड़ी चलाना)

v. व्यक्तित्व विकास तथा बौद्धिक विकास में उन्नति करेंगे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

+91 9696110134

क्या नया नियम हमारे लिए कोई सन्देश रखता है?

मत्ती के आरम्भिक पदों से लेकर प्रकाशितवाक्य के अन्तिम पृष्ठ तक, नया नियम एक विस्तृत समयकाल को समेटे हुए है। ये सत्ताईस पुस्तकें हमें यीशु और उसके द्वारा दिए गए उद्धार के वरदान के विषय में सिखाती हैं, परन्तु विवरणों में उलझ जाना सरल है। हमें उचित मार्ग दिखाने वाले मुख्य विचार कौन-से हैं?

डॉ. आर. सी. स्प्रोल इस पुस्तिका में हमें नए नियम के प्रमुख विषयों की खोज के द्वारा नए नियम को समझने का मार्ग दिखाते हैं। हमें पवित्रशास्त्र के अनिवार्य सन्देश को जानना चाहिए जिससे कि हम ख्रीष्ट में विश्वास से चल सकें, उसके राज्य के अधीन जीवन व्यतीत कर सकें, और उसके प्रतिज्ञात आगमन की आशा रख सकें।

डॉ. आर.सी. स्प्रोल द्वारा लिखी गई यह अति महत्वपूर्ण प्रश्न पुस्तिका श्रृंखला, मसीहियों और विचारशील जिज्ञासुओं द्वारा प्रायः पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के लिए संक्षिप्त उत्तर प्रस्तुत करती है।

डॉ. आर.सी. स्प्रोल लिग्निएर मिनिस्ट्रीज़ के संस्थापक थे, सेंट एंड्रयूज़ चैपल, सैनफोर्ड फ्लोरिडा के संस्थापक पास्टर, और रिफॉर्मेशन बाइबल कॉलेज के प्रथम अध्यक्ष थे। वे सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक थे, जिनमें *दुःख द्वारा अचम्भित*, *सभी हैं ईश्वरविज्ञानी*, *विश्वास क्या है?*, *कलीसिया क्या है?*, *यीशु कौन है?* भी सम्मिलित हैं।

लिग्निएर लाइब्रेरी

मार्ग सत्य जीवन
ख्रीष्टीय विचारों का संग्रह

ISBN: 9788199110717